

**GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM**

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0454**

Classification:

Original File No. 5

Title

Kondra- Jashpur Congregation File

Volume:

Running from year: 1928 till year: 1930

Content:

- Letter to Secretary & Pastor on 24 & 14 March 1930.
- Meeting of Church Council on 6 Feb 1930.
- Letter from Elias Tirkey, Daniel Tirkey & Khirstari Tirkey on 8-6-1929 & 11-10-1929.
- Church Council Executive meeting on 23 Oct 1929.
- Council's Resolution on 6 July 1929.
- Extract from the Proceeding of the Council on 17 April 1929.

169

1928

Kondra-Jashpur Congregation
& File

1928-30

File - 5

File No.

Name

Address

From

28.3.30

1570

24.3.30

5.

File

Ruthsara Censor
Kandara

the 24th March 1930.

Mangamwar Secretary ko meo yishusahay
main apke Chitthi No. 145 - Jo 26.2-30
men likhi gayi so main paya Jo Sulman
Turky Ichhela ke tha.

main uske gharke ek larki ka Sadi
nahin deta tha so thik hai. Said ap
logon ko malum hoga ki unka do jagah
Girija hota hai ek khas Ichhela men
Shamon ka Staphit girja hai aur
dusra khas karke Sulman apne
ghar men karta hai. Isko ek men
milane ke liye aisa kiya gaya tha
par yah to achi thik hogaya hai
unde larki ki bhi Sadi hogayi aur
ek men girja ane gane ke liye karar
kar ke achi ake gate hain. aur ~~unde~~
unde ek muchulka achi liya gaya
hai. achi Prayash wamban ke gal mal
achha hone ke aisa malum hota hai.
aur girja ake gate hain

Ref Makor

To

the:

Babu yuwal Lakshid housemaster

Po: Ranchi

Di: Ranchi



[Handwritten signature]

प्राप्तये विचार पोहोचि सिलापांच आपलो गोळा
पुस सहच

- (१) भडला आसल्ल्या चरखे वा बाहेरी आसले जा
लो रिता पुस पायेरी लिखा हे असला दरवारत -
- (२) जो न जेक पुन शाब आ पलाको मोरनी वर पावला
कोरी दुलापो विचारि चारे में गिरगयेचे -
मोर मर गर्भ पल्ल दुवा था अससय हल्ले में
पलाको वचावयात पूर्व संडलेली को से
मोर सायी हो गया पायेरी जानता था तो मोला
वचावयात मोसायी प्रखलाको को लिखा
जब दुलापो आगर्भ पल्ल को वासो माला
रपुन में उतार लिखा तब उसले वात लोरिता
पुस पायेरी जाके पांच लिखा ठेका साबुत हो गया
तब पायेरी पलाको को भडली वहा लिखा मोर
येरो में १० रुपैया मसजिद नाले को भडली
मीत लिखा - इसले वाय पिछे पुल्लिया
थानसे पुनले जांच करे गया था -
मगीलका येरो गा सहार को कुछ खर्च था
गध के पहल त लिखे हे

- (३) देखो कों डर भिसान पायेरी का
आज ठेका से चलता हे

पांच को सला हुवा उसका जवाप -
लारलोपा को इलपास लिखी
जगता हे और पूर्व संड से फानवेल रोपो
जानता हे कि रिपका पानी से तिन आयो
मोर साब को कोन कोल - हांचा व मांडी -
जो हान - हांचा चाखो ड - दो आयो -
मसपुर से ५ प्रचारक वा

ली. मांडी - निरकर
मा: लारलोपा

लिखत...
मा: मा:
वात...
नि...
चे...
हे, लारलोपा
आदि...

शा: - इल भास लिखी
लारलोपा पके और -
मा: मा: -
मा: निहिमीया -
मेकरी पनेस्यो
मा: शा:

सहायतिरली जो नै जानीला वंस माई है जिनके विषय मानवाने
 जिस तर हस सहायता मिल पुस्तकतिरली और तेजाने दिखलिनो
 विपुसतिरली इन दोनो ला आ जतिनो विपुस के जिताने सवसाथ
 आ ज चलाया पुस्तकालय पतरसतिरली को दंगर रखाया
 निष्कारि यथा जोसा मल उस सहायते मानवाने तिनो विपुस
 १६२५ साल में जराया उनका काय पुस्तकालय है इलाहाबाद
 तिरली उसका काय उठाता है इसलिये पुस्तकालय उसका काय
 वाला इलाहाबादसे जो मानवाने तेजाने तिरली आ जो माई सहाय
 है सोहि द्या दुरवाडि या के बिसाये प्रगट निभावि द्या दुरवाडि नै भले
 हफार धरने सब जानते है ये सब बात मुने के पूछे डांड के पांच को दुसर
 पांच साबुतिया विषय द्या दुरवाडि या का गर्भ भले है ये सब बात
 इलाहाबादतिरली और जोलना - और माई जतिरली के आसुर
 जिसकार नसे इलाहाबादतिरली से हफेला जो आरवान यान है और
 आसुर पूछे डांड गिरजा घर के कायना पतर चौरासे आये
 आपड़े गिरजा घर बनीके गिरजा घर लाले भाई गोसासे पाये
 साहब लोग और दुसर पांच द्या दुरवाडि या के तरफ से साबुतिये
 द्या दुरवाडि या का इजहार को साबुत । द्या दुरवाडि या के पांच
 में बुलाया गया डांड में सब कोई था उस सहाय नही पर किराते में
 पुछे डांड के गिरजा घर में पांच के जैसा नै जाना न उसका प्राय कोई
 नही था उस सहाय बुलावे दउय पाये - को : लौरिन युस पाये
 पुस्तकार पाये कानन प्रचारक ये सब इजहार ले ने लगे
 पर के द्या दुरवाडि या साबुत नही दिया द्या दुरवाडि या
 नै जानो से विषय विचार बाज नही किया है जे तो दंगर था
 जे तो दंगर पूरा के को धर में हु फेरा गये भले नही है
 दउय पाये बोला को नूतनो वेसा भले है नूतन द्या दुरवाडि या
 वाली है लड़का न दवाली को नही हु भले जबाब देने नही
 लगा लब निवस के द्या दुरवाडि या के पांच के विषय में को गिरजा घर में
 बहुत जोर से तिन के नाम तो द्या दुरवाडि या साबुत नही दिया के
 इजहार है ये सब इजहार से दउय पाये किया है लगा और
 पांच के विषय में प्रायसला विषय विषय नै जाना जिताने
 न द्या दुरवाडि या के नै जानो तिरली कोई सव दुसर से
 गर्भ भले पाये ।

बादे में पिछे नै जानो के लोको को जड़लो राजा मिले यह
 देवदार उसका माई या यो है देवदार को सिल में लिखा
 था यह बात जो विषय द्या नै जानो के को द्या में है
 को को सिल पांच प्रायसला द्या देव को सिल पांच
 सव नौर स जगाया विषय प्रायसला द्या दुरवाडि या के सिल में
 आपिल के हफेला लौरिन युस पाये से प्रायसला
 गज मांगार विषय सला कागज नही आ जतारी रवसे नही
 मिले इसलिये आपिल देवदार नही जे जे थे
 बिना देवदार कागज का

(८) हमलोगों का दृष्टांत है कि पहिले का घर वास में लिखा है कि
इस पिअंग जंगल में भीतल दृष्ट है तो भी लिखत है कि
अहवाल के सत्तावाहिले तो बिना पसा दृष्ट के पसा घर वास लिखत
गे ।

19: 29211501.12.12

स : नेत्रा तिवर

बा: कल म खास

Q. 20.

स्याः- इलमाय - तिल्ली - तशलोया प्रकैर योश
 आः स्याः

Office

Send a copy of this to
the Board for report and
necessary action

Bo
24/2

श्रीमान् जार्ज कोसिल को मेरा येशु सहाय

मेरे इचकेला का सुलेमान अपना दुःख

हज़र को सुनाता हूँ। और अर्ज करता हूँ

कि हमारे दुःख तकली सुन के बिचार किजी

ये। और हमारी दुःख को दूर किजीये

कोइरा का पदो हमारे बहिन का बचन देत

किया। साथे के दिन पहुँचा साथे नही दिया।

हमारा बड़ा दुःख हुआ। हमारा खर्च बर्बो

फैदा हुआ। वह बोलता है। कि अबिदया

के गिर्जा में जा कर मान लेम हम अबिद

या का क्या दीव किया जो मान लेंगे। वह तो

हमों के गिर्जा अने से मना किया। और

बोला के मेरे ६ लुन लोगो को देखने नही

चहते हैं। उसी समय से हम लोगो छोड़ दिया

और सब इचकेला के लोग और जब तक

उबल दिया रहेगा तब तक हम लोग नही

जायगे। यदि वह इचकेला से बदली किया

हम लोगो से बराबर और रखते रहता है।

बेमार शीमार में भी वह काभी देखने

नही जाता है।

हमारे घर में दो जन मर गये। गड़ने के लिये
 बुलाया व्यर्थ नहीं गया। प्रचारक के इस
 प्रकार व्यवहार करने से वैसे हम लोग
 उसकी गिर्जा में जा सकते हैं। इसलिए
 हम बीसिल के पास हाथ जोड़ के विनती
 करते हैं कि हमारे बहिन या सादी या
 दुबू म मिले। अगर बीसिल भी हमारा
 उपकार ना करे तो हम एसस्टेंट में
 सादी या इतलय देंगे। दो हम आथा के
 साथ बीसिल के दरखास्त देते हैं की
 हमारे उचित बिचार लिया जय।
 हेजूर मालिक है।

सुलेमान तिवी इचकेला

memo No 1145/30.
 F-5.

Dated Ranchi, the 26th February 1930.

Copy of the letter of Suloman Tivie, Lokhela
 forwarded to the Rev. L. Lawrence for report
 and necessary action.

Secretary, L. E. Church.

Office of the Secretary, G.E.L. Church Council, Chotanagpur & Assam.

Church Council ki baithki.

ta: 6 February 1930.

-----oOo-----

14. KONDRA KINKEL SIMANA - Is bishay par jo kuchh karjkarak sabha ne Kondra Ilake ke darkhast par kiya tha so sunaya gaya. Aur Ma: Padri A. John sahib se jo batchit Kondra se ek dosimani par rahnehare pracharak ke bishay hui thi so bhi suni gai aur phaisla yon hua -

SANKALP : Ki jaisa abhi mandli ka simana hai so waise hi rahe aur usmen kuchh bhi adal badal na kiya jay jab tak khas Jashpur Nagar men naya station kholne ka prabandh na howe.

Memo No. 1412 /30.
F. - 5.

Dated Ranchi, the 18th February 1930.

Copy of the Church Council's Resolution forwarded to the Rev. Laurentius Lakra for information.


Secretary,

G.E.L. Church, Ranchi.

Office of the Secretary, G.E.L. Church Council, Chotanagpur & Assam.

Church Council ki baithki.

ta: 6 February 1930.

-----cOo-----

13. KONDRA-TARALOYA - Kondra ke Padri ki chitthi parhi gai jis men wahan ke kisi byabhihar ke sambandh men likha tha aur asantust logon ko appeal pesh karne ka samay diya gaya tha. Dekha gaya ki koi ~~darkhast~~ darkhast appeal ke rup men nahin aya hai. Bichar hua -

Ki yadi Taraloya ke log ilaka phaisla ke upar appeal karna chahen to 1 mahina ke bhitar kar sakte hain piche tamadi ho jayga.

Memo No. 1383 & 1384/30.
P. - 5.

Dated Ranchi, the 17th February 1930.

Copy of the Church Council's Resolution forwarded to the Rev. L. Seka
and the Taraloya people for information.

Secretary,

G.E.L. Church, Ranchi.

Obit
 Receiv 4.12.29.
 Regd 1084.
 Date 30.11.29.
 File 5.
 Reply
 Date

Manjardar C.C. ko mera yishu bahay.

Age main ap ke 23 Oct 29 ke musar
main, Iduka Punch Ka Phaisla.

2. Pring + Daniel + Eliash + Nchemiyah ke darkhast.
3. Eliash + Daniel + Darkhast.
4. Naimani Tishay Ka Darkhast.

ap logon ke janm D. Phaisla ke huye lehi delā
ham yanhām iska Phaisla karna behut hi
Kithin hai. behut Koshish karne se lehi kam
nahin challā hai. Yahi Kishayak bat yanhām
aisha thik thak Kijagaya hai ki pata lagane
se lehi nahin pata challā hai.

Kondra
 30 Nov. 1929 }

Pen se ap logon ka
 Lekar.

Res. Laurentius Laro
 Kondra

True Copie

To,

The Secretary Lutheran Church
Ranchi

मैं मानना - 24.10-24 का. चिड़ी. रिक्का मरी न और नैत
 रिक्का ले रिक्का - जो रिक्का - गया - सो 8, 9, 10-24 का माना.
 और रिक्का मान में जो जो रिक्का - हुआ - है उसे नैत देता हूँ.
 99- 10- 24 में कोठरी और गुफा रिक्का माना. पंच जो जो रिक्का
 किया - सो यह है -

नैमी. के अतिथि चार में पड़ते हैं अंशाना-चै सहा: —

मुदौलौ मुदाले हके इला से मालूम होता है। नैमी-कहीं से पाई है जिसका-कोई साबूत नहीं है। उन्हीं के बेघान-से तुलना नहीं होता है मातो कोई वनौरी बल के ऐसा मालूम होता है। नैमत माछर दुबुडोली पर दोस दिया जाता है इसका-नौ कोई साबूत नहीं है। पूर्व डांड प्रचारक पत के तीन चार डोली के ताईयों की बात से नै मालूम होता है कि यह माल जो नैमी को मिला है नैमत का नहीं है पर रक्त खडिघा कांड के का-जो मोसोमत (नैमी को मा) पौलीना के घर में बीते माल धंगर घा पर इसका-नै पूरा साबूत नहीं है। इसलिये यह नैमी को दोड, कोई दोशो दार नहीं पाये गये-नैमी मरडली काडून के मोताबिक मरडली से ज्ञात होता है ॥

सूचः -

३५ नोकी राय - ते मन दोष है।
 ३६ " " " दोनो दोषो है।
 ३७ " " " कोइ साबूत नही है।
 ३८ " " " ते मन का दोष नही है।
 ३९ " " " चाचु खड़ि पाके बाउ उससे मुनी
 ४० " " " बापें से चाचु के अपा गो बापि मे।

[illegible]

True Copy

सो: तारा लोपा ।

पिपारे बघोड़ा के लूयेरान मराडलो ड्योकोस ओ इलाका के पंचमे
हमों को निवेदन को कर्जो है ।

आगे यह बात है कि नैमनो लिक्के जो वह जैसा पान में गिराया है पर
उसका कोई एक बात फ़ैसला नहीं करने से कैसे बनेगा यह सभी का
बात सब जगह में फ़ैसला किया जाता है तो हम लोगों का घर में
जो कभी हुआ सो फ़ैसला नहीं हो सकेगा, करने से जरूर हो सकेगा
हम लोगों का आसरा और ज़रोसा है कि यह नैमनो का बात फ़ैसला
ओ इसाफ़ किया जाय अगर यह बात सजाई न होने से हम लोगों
को पोलिस कदालत में नैमनो को बढ़ाता होगा । जब आगे बढ़ने से
जानो कि लूयेरान मराडलो से इधर उधर का बात होगा । इधर उधर
होने से पीछे सम्मालना मुसकिल होता है ओ होगा जैसा बहुत जगह
हुआ है । हां पर अभी सब बातों का आसा करते हैं आप लोगों का ऊपर
करते हैं सो इसका जल्दी से फ़ैसला करना चाहिये । अगर फ़ैसला आप
लोग नहीं कर सकते हैं तो हम लोगों को कोई एक दिया जाय ।

डॉ. अडो गं लिक्के

सा: तारा लोपा बा: खा:

१३, द्दी-२६

डॉ. दानिएल लिक्के.

डॉ. एलिअस लिक्के,

पकाचौरा बा: खा:

डॉ. नेहेमिया केरेहा पकाचौरा.

बा: खा:

Trulokh

पकैरचौरा

२१ द्, १९२६ ई २०१०।

महाशय,

धर्म धुरधार, महोदय, दयासागर कोठरा के पंचों को
इतिहास तिकै का प्रेमसुहाय।
आगे बात ऐसा है कि हमारा बहिन नैमी तिकै कि ससे मीलके
आम्र के आगे गर्जवती में है, गर्जवती देखके हमलोग जांच करते लगे। तो वह
अपना भाई नैमत मिंज को जो कि दुलुयेली में है ठसीको कहर देती है। तो
पहले बात को कैसा में नैमत सुन जग्या और तब १६ मई महिला को
पकैरचौरा आया और बोला कि हम सारे नष्ट में आया २ बात सुनता हूं।
तो इस बात को सबमिलके जांच करो बोला तो हमलोग पांचो घर के
घोटे बड़े सबमिलके माई महिला के १६ वारीख एतवार सांम को बैठे और
पहिले नैमी को जांच किसे तो वह अपना भाई नैमत ही को कहर करती है और
कहती गी है कि मैं अपना भाई नैमत से जिस साल मेरा पिला मर गया
उसका दूसरा साल से मिली हूं कहती है और नैमत को नै पूछते है तो
वह कहर नहीं करता है। फिर दूसरी बार नैमी से जांच कि या उस समय को
नैमत ही को कहर किई और नैमत से तो जांच कि या लेकिन वह तो इन्कार
ही जाता है। फिर तीसरी बेर जो जो लोग बैठे से वे सब के रीबोल कि
लड़की को एक दो को रर देने जांच को तो निसको कहर करती है
बोले तब में पहिले नैमी को एक कोररा दिया तिसपा नै नैमत ही को
कहर करती है। बाद में नैमत को भी एक कोररा दिया और पूछा लेकिन
वह तो इन्कार ही जाता है और सब छोटे बड़े सब जानते है कि जब वह
सहारा आता तब बराबर अपना सारे नैमी के पास सोता है। मैं रूद
अपना आंख से तीन दिन सामिल सोते हुए देखा इसी से मैं पूछता हूं
तो उहरी हमको गला दबाता है, इसी खास से मैं उसको एक कोररा पौर
यह बात हमलोगों से नही हुआ और सब सलाह किसे कि जब तक इला का
पंच में जायगा तब तक सफाई पद नही होंगी कहके हमलोग सब चले गये
पहले बात को सफाई कल वास्ते नैमत अपने पंचों और दाऊर पाडी को लाने
आवेगा और जून ११ तब मंगल रोज बैठके होंगी। तो कोठरा के पंचों को
आगे किई जाती है कि इस बात को सफाई करके वास्ते जहर से जहर जून
११ तारीख मंगल रोज १२ बजे एगिर होरिये पकैरचौरा में।

Sh. इलेप्रस तिकै।

Sh. दाति एल तिकै पकैरचौरा।

सा: तारा लोपा प्रकार जैरा ।

I आगे में नैमनी तिकी को लुरा को बघोंडा हाता लूचैरान मिश्रत के देवकीश पत्त को मैं निवेदन को कर्जो करवा हूं। बात यह है कि मैं नैमनी तिकी ईश्वर को आशा के बिस्वस हुआ हूं वैंसा मैं ईश्वर के आशा के बिस्वस हुआ हूं। रघुनाथ पुर माडली के डुकुटेला का नैमन माछर से फंस गया हूं व्याजिचार के बारे हमारे घर में आता जाता रहा, बट जब तक आता है मुक्त को हागा को व्याजिचार के बारे में फंसाया सन १६२२ साल में फंसाया है दिन तो मुक्त को पाद नही है जो नही मैं फंस गया और व्याजिचार का काम बरोबर यहां मेरे घर में महिमान आता जाता रहा उस समय मेरे घर में व्याजिचार का काम होता रहा पर की गर्ज का बिकाना नहीं रहा को नहीं मिला १६२२ साल में दानिएल जई का आदी मेरे देदी आई आया था सही गुजरने से धरलौट गया उस दिन मैं नैमनी नौ उनके साथ उनके घर महिमान बला गया उनके घर डुकुटेला जब मैं बटों उनके घर पहुंचा तब से नैमन मुक्त से व्याजिचार का काम मुक्त से करने लगा जिस रोज तक मैं रहा उस रोज तक व्याजिचार का काम हुआ अर्थात् २५ दिन तक रह गया था ऐसा बात होने से माळूम हुआ मुक्त में गर्ज रह गया केचे नैमन मुक्त को नैमन घर मुक्त को उनके ला पहुंचा दिया और नैमन यहां आठ दिन रह गया था हमारे घर में नी आया था उस समय भी व्याजिचार का काम होता रहा तब बाद में आपका घर चला गया तब मुक्त को जो गर्ज हुआ है सो झगट दिस घड़ा तब मैं बिचार किया कि दोनों को ईश्वर को ओर से एक दिन दोष दाउ मिले जा ।

II अगे दिखाया जाता है कि नैमन कहता है कि मैं नैमनी से बावकीश और व्याजिचार का काम नहीं हुआ हूं मेरे ओर से गर्ज नहीं हुआ है दूसरों का है ।

यह बिचार से नैमन पंच किया ता: ११-६-२६ में दोह पादो पंच किया पंच का आभा से हमको दोह पादो पंच के बीच में मुक्त को इजार पद्ध में इजार ठीक से दे दिया पर को मेरा इजार ठीक से नही सुना को सादा कागज में इजार की ठीक से नही लिखा न मेरा आई इलियास आई का ना मेरा मा पौलौना आ जो मेरे घर में नैमन जब आता जाता रहा उस समय एक साथ रात में सोते थे इसका इजार दिया है उसकी ठीक से नही सुना न नही लिखा जो हकिमत बात है पर बात है नैमन के इजार सुना गया और सुना गया इस सबब से इसी मसु किया गया नैमन निर्देश और नैमनी दोषीगार यह जो फल है एक दूसरों का है इस वस्ते मुक्त नैमनी को मरा डी सजा का डुकुम हुआ है यह उदास को निरास के द्वारा मैं ईश्वर को पंच से फेर अपील करता हूं कि मेरा इनसाफ कर दिया जाय बिना पुरुष के बीज से बच्चा नही होता पुरुष के बीज से होता है यह चलाव पृथ्वी में नही है अगर इस बात का फसेला न किया जाय को न लेवे तो मैं पुलिस अदालत से खोज लुंग हकिमत यह बात यह फल नैमन मिल जा है इसमें मुक्त को कुछ डर नहीं है इसी लिये मेरा निवेदन को कर्जो सुना जाय

वि: नैमनी तिकी
सा: तारा लोपा प्रकार जैरा
तार: २३-६-१६२६ ई०

22/10/2016

Church Council

Received

Register

Date

File

Reply No

Date

प्रभु में प्रियारे प्रेरित जुबल लक्ष्मी ओ ओंसिल नाम
लो गो गो पञ्चरत्न चरित्र दस्तावेज भाई यों का पोसु

महाशय देवे
(१) बात है कि मैं रिक्स्टोड़ीं गतिरको पूछेसिं मइलने
इसाह्व परचारकने बादलो के बारे में ओंराका
लो रिन युस पादरी ओ ओंराके पांच के पास दरवास
तिरवा था परचारक का आसुर देरव के मैं तिरवा था
असुरात दरवास में देरवा जायगा कि मैं विचार तिरवा
हूँ जो रिन युस पादरी ओ नमान मास्तर-ओ-सुर युस-
साधु आके पूछेसिं मैं इमारा दरवासत मोलाये
इजहार लिखा मैं साबुन दिया परहमार बाल को साधु
बहुत जर लिखा उससे इमारा बात ठिकसे नहीं सुने
ओ ठीक से नहीं लिखा गया इमलो गो का बात को
नमान मास्तर सुनने नहीं चाहता है वा असलामत
चाहता है सब पांचो ओ ओ पादरी ओ अन्धराय
कर देता है उसी का बात सुनते है

(२) मैं आप लोगों को ननाथा बनाया जाता है कि
इमलो गो के घर में खास इमलो गो का बहिन अथवा
जुवाये नमानी गर्व बाल हो गया उस समय इमलो गो
ओंराका पांच ओ पादरी पास दरवास तिरवा लिख
वात पर सच लिखा जाय कि नमानी ओ गर्व बाल है सी
साबुत देता है कि राधनाल पुर दुल रोला के नमान
मास्तर का है। यदि दरवास में वीरव्य गुमला का
दाहिने पादरी ओ पांच और ओंराके पादरी ओ पांच
पूछेसिं के पांच मिलकर पांच के घर के नमान
ओ ओइ पदर के सच को चोर या जो आदमी उसने
साथ पांचाई पकड़ने नहीं सको नमानी तिरको
नमान मास्तर का पांच में सबुत दे दिया ना मइलने
हिसा मिस लिखा गया है यह बात नमान का खेला है
यानि लिखता है आप लोग दरियायत कर लिजये
यह हिसा मिस इसाह्व परचारक ओ नमान मास्तर ओंरा
का और दाहिने पादरी

(3) इसीलिये हमलों गो व्यापित ठो बहुत उदाम निरास हो
 रहा है स जो व्या वात असल विधा जाता है हमलों गो
 वह विधा मत है संसार लोग को सदा न लोग अनमन
 विच मन व साहने में जो २ प्रो सा रहता है मन्त्र अरजर
 अर बना लेते है संसार से तो लहजा दिख पा जाता है
 आज अल संसार लोग हमलों गो निदा करता है वि
 न मानो अ साध जो असुरी वाता है मन्त्र ने नहो मन्त्र
 जो इ मन्त्र विमन्त्रो तो मन्त्र तो असा पा देरी पर चारु है
 सपते म्बर महनाम को गव बतिया बच्चा प दा दुवा है
 बच्चा लड़का है तब तब न मानो व्या वात असल नही
 करता है मन्त्रो तो हमलों गो लु अरो न निमान
 मन्त्रो मे रह कर विधा अदा है यह बात न मानो व्या
 असल पुनिस म देता पर वि अमो ठहरे है वि
 ओ सिल आता है असल अरने को पा देरी महव
 बीला है पर आसरी देरवते है वि ओ सिल मे नही
 आता है इस वास ते हमलों गो ओ सिल से छुटे पांगले
 है वि हमलों गो को हो देवे गांव तरा लोयो मे
 इसी पंक्ति मन्त्रो है ता: २-११-२६ मे विस प
 सहव के पास दरवास देगे आपलों गो व्या अमर
 ता: १८-१०-२६-तब देवेगे ओर जवा पत हं
 माने से हमलों ग गिरजा जाना ता पलो पा मे
 मुहु अरेगे १ ओड़ो ग. तिरवो १ इल पास तिरवो
 ३- तिरवो मन्त्र अरवो ४ पा लना तिरवो-चाहे
 चार घर व्या आपलों गो को लड़व्य वाले सब।

लि: रिशताड़ी: तिरवो

सा: मन्त्र चोरा

ता: ११-१०-२६

Office of the Secretary, G.E.L. Church, Chota Nagpur & Assam,
Ranchi.

Church Council Executive meeting

23 October, 1929.

-----oOo-----

1. Kondra Ilake ke Taraloya mauza ke Christading ne ek darkhast Naimi Tirkey ke byabhichar ke sambandh men bheji jo parhi gai . Council ne jo mat is par pahile prakash kiya tha us par bhi bat-chit hui aur yah sthir hua -

SANKALP : Ki Christading ko likha jawe ki wah Ilaka panch se us mokdamma ke bishay ke kagjaton ka nakal mange aur Council men Apil kare. Phir Ilaka ko bhi likha jawe ki wah bhi sab kagjaton ko Council men bheje jisten yadi apil darkhast awe to Council usko phaisla kar sake.

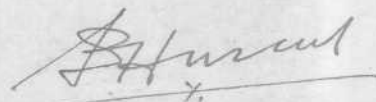
Sd. P. Murad.

Secretary to the Church.

Memo No. 100/10/29.
P. - 5.

Dated Ranchi, the 25th October, 1929.

Copy of the Church Council's Resolution forwarded to ^{1 Bahu} ~~2~~.....
Christading Turkey
Laurentius LaPra..... for information and compliance.


Secretary,

G.E.L. Church, Ranchi .

जो श्री ६ श्री महा उपसन्धावा चार्ज कौंसिल जेना
को कोन्डरा इलाका मराडला सकीन गेलोंडा के भाईयां का
प्राशु सहाय ।

आगे हम लोगों के तरफ प्रजा कल ईश्वर पिता
को प्रसन्न दया से कुशल से हैं पर दुर्गुर लोगों का
उदाय मंगल हम लोगों के लिये नया मालूम हो भी
प्राप्ता रहते हैं कि दुर्गुर लोगों को भी ईश्वर पिता
कुशल से रखा होगा ।

आगे ^{यह} खारजा है कि गेलोंडा मराडला से समदना
खजाना २५ रुपैया पांचास रुपैया प्रचाक के लिये महुवाए
का तनखा दे, लेके वचित हुआ था बह रुपैया को
बाबू मनमोहन घोषा जो कोन्डरा में काम करता था
२५ रुपैया लेके बदला में चला गया है

करीब ३ बरस तक ये गया पर रुपैया मांगने से
भी नया दिया वास्ते भाईयां का प्रारज है कि कौंसिल
बह रुपैया को वासूल कर गेलोंडा के भाईयां के हाथ में
मेहरबानी कर के अज दिया करें कि यहां भाईयां
सह कर समझकर मिशन में रवच किया करें ।

प्रविरहाम लकड़ा

Memo No: 936/49.
F-5.

यह दरवास्त कोड़ा इलाका चेयरमैन को भेजा जाता है
क्योंकि ऐसी दरवास्तों को सीधा जेल में जाना नहीं चाहिये
जब तक इलाके के जीत में उनका विचार नहीं हुआ है और
जब तक इलाका के मारफत ऐसा दरवास्त नहीं आता है
इलाका चेयरमैन इसका तदार्थ कर देना जिसका करें

Signature

Sanitary ce
30/7/29

Ex V

गिर्ग २७.

मरुम सुमारे

इस मंडली का

माप ही बनाकर

ले जाइये

हुम्नू सब को

पूछकर

A. Kuyum

बूला हिस्सा

वही ले बना

लिखा जाय

Rev. M. Tappan

महाशय

कोइरा माम सभा को, इचकेला मंडली की मारे
से बहुत ये सुसहाय -

मागे लिखना ऐसा है कि इस मंडली में जो बात
मो. मनोनित मो. दुम्फु के बीच में, सातवीं माशा उलंघन
करने के बाबत उठी, मो. जिसके विषय में जांच कामीशन भी
यहां आई थी, पर यह बात किसी प्रकार का फैसला ना किया
जाकर आज तक मोलतबी रखी गई, यहां तक कि अब हों उन
का पाप मां खों से दिखाई दे रही है, यह बात सच है आज
कल मो. मनोनित गर्भवती है पर वह अपने को छिपाने के
वास्ते गुमला चली गई थी पर यहां के आई लोगों के गुमला
पेछा करने पर वह फिर इचकेला आई थी पर अभी फिर ता:
३-२-२६ को गुमला चली गई है, हमों को बहुत सकहे कि
उधर रहकर वह अपना पाप छिपाने के वास्ते जतन करेगी
और ऐसा करने पर हमों को झूठा बनानेगी ।

इस लिये माप लोगों से फिर माजी करते हैं कि हमों
को मंडली की ये बेपच जाते तय किई जाय, मगर तय न किई
जाय तो हमें बहुत मसहाव है ।

पर यह बात जल्दी होने चाहिये, देर होने से क्या जानेगी कानहीं
होगा कीों कि यह स्त्री गुमला से यो कहीं दूर जाने वाली है सो माप
लोग दरयाफत का के कोई उपाय जल्दी से किई जाय

पंचों की राय से

आकत Alodia Kumar

~~पुस्तक~~
पुस्तक

कोन्डरा नाम समा

को मिले ।

Give this

IV

Manjhas Padri bahar ko mera
bahut zyada sahaya.

ale to ap mere leiradhion ke utsah
ko aur hi barhai kar gaye hain
to main ale kya karun. utna din
to Rev. Dr. Kujur jo kahi wa kiye.
par ale to ap bhi unhi baton ke picchhai
men phir lage hain. mera nyay
karne kahi koi nahin hain aisi
samajh kar main bahut dukhit
hun. so agar ap ki kripai ho to ~~don~~
unki aur meri bhi parhi kriye.

ageshulh

ap kai dinachhin

A Kujur

Lehkela

1-2-28

18.5.29

६५

सिरोंगा २३-४-२९

श्री श्री कः श्री महामायाचार पादो बाबु आप
को सिरोंगा के पतास प्रवीन के ओर से
दिन २ की येशु सहाय पहुंचे -

आगे कुशल मंगल ओहरे

हैं - और आप का भी आशा सकारावत
है को आप भी ईश्वर की दया से आद्वे
होंगे फिर चिट्ठी लिखने का कारण यह है
कि कमचारी होकर जिस कलिसा में जीते हैं
उस की निंदा करना और एक दूसरी कलिसा
की जय मना कर लेककर देना और लोगों
को बहकाना और लेजाना बहुत ही नालैक
काम साम्रा और लोगों के रिश्ते
जाना को देख कर मैं बहुत उदास
हूँ का जाने और एक बेर पंचैत होमे
वाला है उस में कितने बल ~~का~~ पाते
होंगे अभी तो हमारे या हां थोड़े
आदमी लूथेरान में इसघोर है सो मालूम
कि जेथे और एक दूसरा बात लूथेरान
प्रोहितों को चोर और लोभी है बोल
निंदा करते हैं इसमें मैं भी मैं
बहुत उदास हूँ और मुझ पर भी दाव
पेसते हैं कि कैसे उसको गिनावे

इसमें मूल सिमोन प्रचारक - अवदीया
माष्टर और असप प्रचारक

लि: पतास दोषो सिरोंगा

पावे मनमासीह रोव्यो पाद्रीबल
कोडा हाता

आप लोग और ईश्वर के सामने बिना काम बिना
 मगर मैं करार करती हूँ की दुम्ह में ये काम
 गुजर गयी है मैं आपसे फरार में पड़ने न चाहती
 की मगर दुम्ह के फुसलाने से फंस गयी वह बोला
 की मैं सदा आप की उपकार करूँगी और बुद्धिवादी
 बड़का विचारों में उपर देखूँगी बोला और उसी के
 दबाने से मैं न करारती की मगर मैं कहूँगी कि
 मगर आप लोग मेरे बिना न चिन्ता करोगे तो
 दुम्ह के घमके देने से मैं बुद्धि का बोली मगर
 ईश्वर की कीर में मैं सब कहती हूँ कि ये मेरी पाप
 दुम्ह में गुजर गयी सो मैं आप और ईश्वर के सामने
 करार करती हूँ सो मेरा चारी कसूर माफ़ करो
 ईश्वर के मैं आपनी खुशी से ये करार नाम लिख
 देती हूँ लिख मनीनित - एक डा

आप लोगो और ईश्वर के सामने बिस्व काम किई
मगर मैं करार करती हूँ जो हुंफु से ये काम गुजर गया है
मैं अपनी फंदा में पड़ने न चाहती थी मगर हुंफु के
फुसलाने से फंस गई वह बोला कि मैं सदा आप को
उपकार करूँगा और बुची बाड़ी पड़का कियारी से
उपर देऊँगा बोला और उसी के दबाने से मैं न करारती
थी मगर मैं कहां जाऊँ अन्ध अन्ध आप लोग मेरे लिये
न चिन्ता करेंगे तो हुंफु के चमकी देने से मैं बुध जानोली
मगर ईश्वर को और से मैं सच कहती हूँ कि मे मारी
पाप हुंफु से गुजर गई सो मैं आप और ईश्वर के सामने
करार करती हूँ सो मेरा भरो लभुर साफ करो इस
लिये मैं अपनी खुसी से ये करार नाम लिख देती हूँ

लि: सती नित - लब्ध

प्रभुदेष्टव्य नमो ब्रह्म + कोमल किलिप च चारो
ता: १४-१५ नमो कोमल किलिप सती नित मोसो मत के
पास गये पुछने से जबल मिले दो लामि
दो रुय पाया को बुलाने के लिये गुमल नजे
गये हैं उसके लामे से सब बात बोलेंगे ॥
जो उसने करार नमो लिख दिई सो नमाल
गो है

19/12/29 ५ हा

इचकेला

11: 28-1-28

मान्यवर गुमला लुथेरान मिशन के प्रचारक पंचों को
हम इचकेला मंडली के प्रचारक पंच की ओर से बहुत
धन्यवाद ।

भागे हम लोगों का भाव ऐसा है इस इचकेला
मंडली से मो. भनोनित लकाड़ा वीते सनिचर को यहां
से ^{गुमला} चली गई है, हमों के जानती में वह दो जिव है
ऐसा हालत में वह अपने को हमों से छिपाने के वास्ते
वहां चली गई है सो आप लोगों को लिखा जाता है
कि आप लोग अपने मंडली में जांच कीजिए कि वह कहां
रहती है जो किस हालत में, अगर देखिये कि वह
अपना पाप छिपाने के वास्ते कुछ करेगी तो, अच्छा नहीं
होगा. यहां जयपुर थाना में भी इसका इतलाय किया
गया है, हमों को बहुत शक है कि वह अपना गर्भ नास
करावेगी, इसी वजह से आप लोगों को भी ताकित
करने का हुक देते हैं, ।

गांव

पंच

Media Kuyar Maot

खत - पावे

५ पादो, ५ अक्षर कुजूर

ओ ५ वारक पंच

गुमला

मायकर पिताजी

मायको मुक्त A. K. K. का बहुत परामर्श पंहुचे

मायको मायबिदा से मेरे सब बाल बच्चे भले दंगे है

मायको मायबिदा पत्र पाके इस सा परिवार मान

नित है मेरी उसी समय मायका पत्र मुक्तको मिले, जब कि

हमारे पादो बाबू भी लखनऊ से छोड़ा सा पदके से ने पदना

क्योंकि एक दो मायबिदा बचन पदसी, और हमारे

पादो बाबू को पदने के लिये पदसी कि वे पदें, उस समय

मायको मोसमत भी मुक्तको चिट्ठा देकर वेठी थी और गिर्जा

के लिये बहुत आई बलि लोगो में जमा थे क्योंकि उसी दिन

पत्र जोर से मायबिदा से आने लगे मायका मायबिदा

मेरी समझता था कि माय एक विशेष पादो है, पर इस

पत्र से मुक्त भी यह मालूम होता है कि मायके पास बुरा और

मला दोनों एक तौलके हैं, बलिक कोध को ठांव नहीं देते है

इसी लिये मेरे वर्तमान और भविष्यत दशा के विषय बोलने

की शक्ति भी मायके पास है, सुना सुनी में इतना लिख दिये

भगर मेरे कसूरोंको माय मापने मांखों से देखते जैसा भगवान

देखता है तो क्या जमाने में मन्दज से कहवा है कि नरक में

बिना दकेले नहीं छोड़ते, पर हाय यह सब करने को मायको

हक नहीं है इसी में रह गया हूं, माय माय

माय माय माय माय माय माय माय माय माय माय

माय माय माय माय माय माय माय माय माय माय

11

भाप के पत्र से मुझको भी यह सूझ पड़ता है कि किसी के पास बिना समझे होचे कि ईश्वर मलिन बातें लिख देना दोष नहीं है, इसी से ऐसा लिखता हूँ नहीं तो ऐसा लिख देना मैं उचित नहीं समझता था, अगर भाप के विचार में भी ये सब बातें गर उचित जान पड़ेंगे तो मुझ निर्दोष के लेखों को दमा देंगे

I भाज मैं मोसामत के खेत बन्दोबस्त करने में बिगोड़ता हूँ पर जब मैं यहां नहीं लाया था तोरे जब पैमणस नहीं हुई थी मेकिया उस समय कौन बिगोड़ा, मैं तो करीब दो बरस से यहां लाया हूँ, कि क्या उस समय भाप यह सब करने नहीं जानते ये लोकवा दुम्फू नहीं देखता ओ जानता था.

II जिस खेत को यहां का जमींदार मोसामत को दे चुका था, उसको बिगोड़ने वाला दुम्फू और मोसामत है

III इस मौजा में खेत का सलामी बढ़ाने वाला भाप का मोसामत और दुम्फू है, मैं शक गरीब भापों यह नहीं कर सकता हूँ

IV मुझ पर दोष लगाने वाला दुम्फू और मोसामत है

X V जंगलूर स्टेट में जो भाइयों पैमणस से जाये है उसके बिल्लुवा लड़ने को बलाने वाले भाप है, जो ठ और ठेकर खिलाने वाली

X VI यमी की बाहों में इस मंडली में भाप को मोसामत के बल है

X VII इन सब बातों में भयद देने वाले भाज से मैं भाप को समझता हूँ

XVIII दुम्फू और मोसामत की शकंता पर कुछ विचार करने की क्या

भाज मैं भाप की इस वद नियत मोसामत से बहुत है इराज हो बैठा हूँ अगर भाप इस स्त्री के लिये चिन्ता में हूँ वे हैं तो जल्दी यहां लाकर बार भावमियों से दण्डपत कर लो यहां राजा हाकिमों से राय लेकर भेज कीजिए

डुम्फू कहा था कि मोसामत का खेत ~~बन्दो~~ बन्दो बस्त करने को भाप
और रोबी से ढे 2 साख लोग भागे वाले थे सो कहे इतना देर लगाते
हैं बन पड़े तो जल्दी भाग चाहिए जोधे बरसात जोर करेगा,

जशपुर में मनवार जमीन को रैयती बन्दो बस्त कर करने का हुकुम, मजाल
त से - निकाल देंगे तो जशपुर के सब मसामो जो जमिंदार लोग भाप
को बहुत 2 सलाम बोलेंगे, मैं स्ट्रे भीतर का भादमी होकर यह काम
~~भरने को इरत~~ नहीं कर सकता हूं

मनवार जमीन को रैयती जमीन बनाने के वास्ते बहुत सपैया जोगाड़
करना चाहिए यह भाप को खोब ख्याल रहे,
फिर मेरे हाथ का + पकड़ा हुआ चीज को भी बिगोड़ने के लिये
भाप और भाप को मोसामत और डुम्फू को बराबर तैयार रहना
चाहिए, क्योंकि मेरे लिये बहुत है। इस मैं समझता हूं कि भाप
ठोक बिधवाओं की सुधि ले रहे हैं, जब भूख का समय आ रहा
है मोसामत के लड़के वाले साल साल भादें फिरते हैं सो भाप
जो डुम्फू उपाय को जिए की ये निर्दोषी लड़कियां मां के कहने से
झार 2 ना धूमें,

वहुत बातें छोड़ कर संक्षेप से लिख कर बस्त कर रहा हूं
ऐसी बातें बहुत लिख देना भी मुझे उचित ना था - पर
भाप से शिद्दा लेकर इतना लिख दिया सो भाप को जिए

भाप लोगों की मेहरबानी
से मैं यहां 5 एकड़ दोन और
हाउ मिला कर जमीन रैयती
पाया हूं।

भाप का Akhijar
Master Ichhela

27.6-27.

~~107~~ 10729

गुमना ११-ई-२७

पिछले एक मास दिना काल परीवारों को मेरा बहुत
 जोर सहाय होवे — प्रभु को क्या से सब हालत माल
 है मालूम रखते हैं कि ५७ सुपत्तियों को जो मला चंगा
 रखे — मागे में बड़े माप सोरा राखिए छुट्टाटे पाय रख
 बाद को बार लिखवा दूँ — मैं छुट्टाटे उपर बहुत
 लिखवा रखवा था — कि माख दिपा रखे लिखवास्त
 मागे मारी है — मागे मंडली को माई बाइनों से
 बड़े प्रेम को साथ रहता मागे मालमा मालिखवास्त
 से मारता है मैं ऐसा लिखवास्त जानते मैं छुट्टाटे
 दिवाला को भी बहाया मालीक से बहाया भी
 बहाया है सुमको माख माल में मरले मारके
 लाल की उमरि लिखा मागे कि मेरा पुरा मारी मागे
 लाल बड़ा प्रेम सुम पा था मागे माल लाल मैं ऐसा
 हो पाया था — पर सुने सुनते मैं मैंने रख रखवा
 सुना — कि लिखवास्त को मैं मोरी माल से लिखवास्त
 गोरी को लाल को माल रा लिखवास्त लाल से माल
 माल, मारके लाल वस्त माल था मागे लाल ने
 माल रखवा मागे लाल पुरी लाल माल माल

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

အမှတ် ၁၂၂၂ နှင့် ၁၂၂၃ နှစ်

အမှတ် ၁၂၂၄ နှင့် ၁၂၂၅ နှစ်

အမှတ် ၁၂၂၆ နှင့် ၁၂၂၇ နှစ်

အမှတ် ၁၂၂၈ နှင့် ၁၂၂၉ နှစ်

အမှတ် ၁၂၃၀ နှင့် ၁၂၃၁ နှစ်

အမှတ် ၁၂၃၂ နှင့် ၁၂၃၃ နှစ်

အမှတ် ၁၂၃၄ နှင့် ၁၂၃၅ နှစ်

အမှတ် ၁၂၃၆ နှင့် ၁၂၃၇ နှစ်

အမှတ် ၁၂၃၈ နှင့် ၁၂၃၉ နှစ်

အမှတ် ၁၂၄၀ နှင့် ၁၂၄၁ နှစ်

အမှတ် ၁၂၄၂ နှင့် ၁၂၄၃ နှစ်

အမှတ် ၁၂၄၄ နှင့် ၁၂၄၅ နှစ်

အမှတ် ၁၂၄၆ နှင့် ၁၂၄၇ နှစ်

အမှတ် ၁၂၄၈ နှင့် ၁၂၄၉ နှစ်

အမှတ် ၁၂၅၀ နှင့် ၁၂၅၁ နှစ်

အမှတ် ၁၂၅၂ နှင့် ၁၂၅၃ နှစ်

~~1075129~~ Σ VIII

ସଂଖ୍ୟା ୧.୭-୨୭

[illegible]

14.

INDIA

POST



9 JULY 27

CARD

ADDRESS ONLY



WRITING SPACE

Handwritten text in Devanagari script, likely a message or address, written in the left column.

Amoliya Ray
Village Ichhela
 Post office Jaspur
 Bagar
 Jaspur state

10/5/29

[illegible]

Ham ko to janaab ki phurat nahi
 mili ki ham Head-Quarters chhor ke nahi
 jayenge. Agar Itchela ja rahi to sayd sab
 bad maalum hoti. Bap ab kahiye kya is men
 main doshi hun? Kya is bat men main moamat
 ko dekh dekhwaad hun? Ashwa phurat se
 to dekh karasta hun? Bap main to sochta hai
 ki is bat men main doshi hun. Iske bare
 ap kisi mese upar linka na samajh sakte ho
 Kyonki main main main ap ne ki ham
 nahi kya hai. Hamare khet kene ka bhar
 hamare bhayon ke upar ham nahi chhor
 diya tha jaise wese bhala sanghe jaise
 kare jaise tak ki go upaaye ham diya
 usko chhota sa razi tak ham nahi kisse
 sab hamare bhayon ke imar par chhor diya.
 Is ham jaise kahi kahi diya ki ap logon ke
 upar ham sab nibhar chhor dekhain chahat
 ap log jaise kahiye us men ham manjuri
 Kyonki ap logon se ham zyada bundhiman nahi.
 So Bat ap se ham jahi aji karde ki jo
 sanko ap ke man ^{men} mere ^{par} par gaya usko
 dekh kijiye aur jyon ka tyon ap pahle motabiki
 larka bulya samajhiye. Ap to mere Bat aur
 Egoist dono hain jahan tak ho main ap logon
 ke adhin aur adyabari bana rahunga aur
 ap logon kailagya aur sahaib bichar ko palan
 karna ko sabai uyaat huni moamat ke is
 bare Kyonki kaisa bat hai isko main
 dargahat dekunga aur dekhunga ki kya
 ghat bhaad hai. Agar jaise ap kahiye
 wahi bat waisa hi hai to mere tarikh se
 with ghat na hope pawegi. Kyonki kahi se
 bakhara karna mere tak bikhre khat
 hai. Pitaro chag ham log chhote. Aur
 mitro to hain par kahi jahan tak
 ham logon ko main kahi dekh

uttam main karne aur suchal chalm
 chakten aur nish jagala men apne kuchle
 se ishan ki jagat prakash karinchale
 aur yake wale ghatelele hamare
 chakten aur chakten se indoli christian nam
 kis kar se jinke badnam hove aur
 jabki hake bante hote diat jinke se
 dur kame ko yake ghatelele hove
 aise hai kin agar chakten jinke hile
 wah kyon na ho balant barh yake
 hove se yakelele kaitnelele saadhan
 se rahane paritahai. Ham to chakten
 ki jinke yakelele hamare christianified
 hain kisi se koi anuchit na hove pawa
 par kural prasane jagya kam aur chak
 hove aur hovelele kaitnelele kaitne 2 ho jati
 hai. Aji ki kaitnelele kaitnelele kaitnelele
 ek admi ko ham yahan chakprasi men bhark
 kar diya tha usko bhanda jamadar kam
 mil gaya tha par wah badnam kamaya
 aur abhi samucha department men parwana
 jani hua ki koi department men usko kam
 na diya jave. dekhiye thori baton ke liye
 christian nam badnam hote hai. Aise kam
 aur badnam se hamare christian nam ki
 jyada badnam hote apne adhyakos logon ki
 jo meharwani kar christian logon ko rakhte
 unke badnam aur hamare problem ki Raj
 bridhi ki ghatti hote hai. So ham log to yahan
 yahan tak ho bari dhyan se chalte aur
 kam karke jaise John sabhi hile jab aya
 tha apne updeshe se men sunaya ki jashpur
 men Iswar ki Raj bridhi hui So Bah ham log
 pratidin sochte ki koi prakas ka kalank
 ham log christian nam ke upar na lawen
 par achha nam upayon kar barhawan
 mosamat ke upar jara hile hamare mau

men andesha karne ke nahin usko ham main
 se pyar karke aur uski behn ko chhodo. Til main
 hi kharid na chahie. Bap zamindar ke kai
 bahar ham kaha khaa. Bhai ai tak use
 hamara milakat nahin hua hai. Badmash
 se wali gaham se nahin aya hai. Aise
 se hamare bhai bait daryapat karke phir
 apke pas likhke rakha hai. Ham ko to
 jara hi phir nahin
 khat ke bahar se khat jawaab dena
 Bap ap se akhri mein meri galti hai
 khat ke bahar. Ko amchik panka mat
 khat ke bahar apne apne ke agya khin hui
 apne apne ke bahar se
 Bap mere khat ke bahar se
 se ko amchik agya hai. B. Minj
 to uske waste main mafhi
 mangta hun.
 B. Minj

Spring

Jashpur Nagar

3/6

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

No. 794 / 29.
F. - 5.

Dated Ranchi, the 20th July, 1929

Copy of the Council's Resolutions for-
warded to the Rev. Laurintius Lakra, ^{Slaka Chairman, Kendra,} for
information and Compliance.



Secretary.

OFFICE OF THE SECRETARY G.M.L. CHURCH COUNCIL
COUNCIL'S RESOLUTION.

3 July 1929.

-----000-----

10. KONDRA-ICHKEELA COMMISSION - Commission men Ma: President, Secretary aur Ma: padri Daud Kujur bheje gaye the. Ap logon ne jake wahan sabhon ke ijhar lii aur Council men muhjabani report diya gaya aur ijhar men se kitni baten bhi parhi gain. Bahut soch aur dhyan se mandli ki awastha aur anya baton ko bichar kar yah nirnay hua -

(a) Ki mosamet Manonit mandli se nikali jawe (chhoti saja men rakhi jawe) kyonki byabhicharini hone ke karan wah apradhini hui hai. Dumphu Suleman ke upar pure sabut nahin pahunch saka so sandeh ke rup men use dand dena achchha nahin bujh para. *sd/- P. Hurad*

OFFICE OF THE SECRETARY G.E.L. CHURCH COUNCIL.

COUNCIL'S RESOLUTION .

6 July, 1929.

-----oOo-----

17. KONDRA-TARALOYA KA KARKHAST - Kondra Ilake ke Taraloya mauza ka Naimi Tirkey ne ek ~~§~~ appeal Kondra - Gumla sammilit Panch ke faisla ke birud men kii. Sath sath Taraloya - Pakarchaura tola~~x~~ ke kuchh logon ka darkhast aur khas Kondra ^{Ilake} Panch ke nam se 4 janon ka darkhast bhi aye jo isi bishay par hai aur we parhe gaye.

Nirnay hua - Ki Kondra aur Gumla ke donon padri alag alag Council ne jaisa pramarsh unko diya hai us anusar dosh ko khojne ki chinta karen aur doshi jan ke pragat hone par uचित riti se dand-byawastha ka prayog karen.

Sd. P. Hurad

Secretary.

Received.. 27. 28.

Register No 815

Date. 25. 6. 28.

File. 5

Reply No.

Date.

Kandva

25, 6, 28

मान्यवर चार्च कौन्सिल को कोन्डरा इलाका पंच को और से बहुत 2
चौमुख हाथ ।

आगे हम लोग आप लोगो के पास पकैर चौरा का आपोले दरखस्त
फैल कर के नेज देवे हैं सो आप लोग इसका उचित बिचार के दिखे राखेता
कौजिये क्योंकि हम लोग इसका फैसला आप से नहीं कर सकते हैं क्योंकि
इसके बिषय कोन्डरा और गुमला को इलाका पंच बैठे थे जिसमें सभा-
पति पाद्री बाबू दाऊद कुजूर थे जो १२, १६-२६ को बैठे थे। बैठकी
में एक प्रकार का फैसला हुला पर सचमुच में कोन्डरा के साधारण
माइयों से पंचों को शान्ति जनक फैसला नहीं हुला कारण कि
लड़की का गर्ज है इसलिए दोषी गिनी गई, पर यदि गर्ज नहीं
होता तो दोषी नहीं हो ऐसा मालूम होता है। जिस जन से लड़की
को गर्ज हुला वह ब्रजे जा जाय। यदि सचमुच में ऐसा ही सवा
जाय जैसा फैसला हुला है तो हम लोगो को इलाका संचालना
कठिन है जैसा दरखस्त कागज से साफ मालूम होता है। सो
आप लोगो से कोन्डरा इलाका पंच दोनता पूर्वक भर्त्सा करती
है कि इसका उचित बिचार शीघ्र किया जाय ॥

Candi Laurentius Sahas.

Nayman Khess

Nasri Toppo

मैशन दोपो

23/6/24 सा. नारलोपा -

पिपरी बंधाई के लुपेराग बंधने जो निमि जो ईलावा के
पांचवा हुमांवा निवेदन जो नारजी है
मोगे यह बात है नैकाली नानको जो वह ममी पापुगीर
गाई है पर इसका कोई मय बात पैसला नहीं करने से
मिम बनेगा कोह मोगेवा बात सबजग हमें पैसला-
मिम जाला है तो हमलों गो का धरें जो ममी-हुदा
सो पैसला नहीं हो सकेगा करन जकर हो सकेगा।
हमलों गो मामरा और गेरा सा है डी यह नैकाली
का माल पैसला जो इकसाप डी का जारा मगर यह
बात सजाई वा होने से हमलों गो को पुली स मयलन-
में नैकाली मय नहो गा - जब मोगे बने से जो गो
मि लुपेराग बंधने से तो इधर उधर का बात होगी -
इधर-उधर होने से पिछ स कालना पुस मिले होवा है
जो हो गा जैसा बहुत जग है दुबले । हां पर मजरे
तो सब बानों का मामरा करे मयलों गो के उधर
करने है सो इसका बंधे ही से पैसला करना
चाहिये मगर पैसला मयलों गो नहीं कर
सकते है तो हमलों गो कोई मय थिया जाय ।

जी: मंडीरा - नानडी -

मा: नारलोपा -

वा: रवा:

वा: 23 - 24 - 25

सही. दानिहल तिलको

साकिन पकैर चौरा

वा: रवा:

सही-इलुवास-रवा-

पकैर चौरा -

वा: रवा: -

निहामि मोगेरी

पकैर चौरा

वा: रवा:

23, 6-29

उपागे में तेमनी तिको कोन्डा उपा वधोडा हा ला लुये
रान मिशन के डिन को स पांच को में निवेदन उपा गुर्जे
करता हूँ।

I

बात यह है कि मैं तेमनी तिको ईश्वर को उपाहा को
बिरोध हुआ हूँ केरा मैं ईश्वर को उपाहा को समान बिरोध
हुआ हूँ रा पुनाथ पुरमडली के दुकू टोला का नेमन माझे
२ से फंस गया हूँ बि बिचारा के बीरे में हमारे घर में
जब उपाता जाता रहा वह वद खब तक उपाता है मुझको
ठागा उपा बिचारा के बीरे में फसाया १६२२ साल से
फसाया है दिन ता. मुझको याद नहीं है जो मैं फंस
गया उपा बिचारा का काम बराबर यहां मेरे घर में
महिमान उपाता जाता रहा उस समय मेरे घर में बिचारा
का काम होता रहा पर को गब को ठिकाना नहीं रहा उपा
नहीं मिला १६२६ साल में दानिरे ल मई का सादर उपाया
सादे गुदर जाने से घर लौट गया दोनों से पुनः उस दिने
मैं तेमनी सी उन के साथ उन के घर को महिमान चला गया
उन के घर दुकू टोला जब मैं वहां उन का घर पहुंचा तब
से नेमन मुझ से बिचारा का काम करने लगा जिस रोज तक
मैं रहा उस रोज तक बिचारा का काम हुआ अर्थात् १५
दिन तक रहा गया वा ऐसा बात होने से मैं साबुम हुआ
मुझ में गब रह गया जो नेमन हम को उकेला घर पहुंचा दिया
उपा नेमन यहां उपाठ दिन रह गया वा हमारे घर में मैं उपाया था
उस समय बिचारा का काम होता रहा तब बाद में उपना घर
चला गया तब मुझ को जो गब हुआ है सो प्रगट दिल पड़ा
तब मैं बिचारा किया कि दोनों को ईश्वर को उपा ले शुभ
दिन दोष दंड मिले गा -

II

उपमी दिरवाया जाता है कि नेमन कहता है मैं तेमनी से
बात चित उपा बिचारा का काम नहीं हुआ हूँ मेरे उपा से गब
नहीं हुआ हूँ दूसरों का है

यह बिचार से नैमन पांच किया ता; ११-६-१६२६ में दो दम
पाँच पांच किया पांच का क्या था सो हम को क्या था दो दम
पांच के बीच में मुम को इमार पुष्प में इमार ठोक से दे
दिया पर जो मेरा इमार ठोक से नहीं सुना था सादा भागज
में इमार को ठोक से नहीं लिखा ना मेरा इमार ^{मार्ग} लिखा था इमार
मेरा मा पौलिना का जो मेरे घर में नैमन ~~म~~ जब गुता जाता
रहा उस समय रुक साथ रात में सोने से इस का इमार दिया है
उस को ठोक से नहीं सुना न नहीं लिखा जो ठोक यति बात है

३ यह बात है नैमन के इमार सुना गया और रखा गया इस सब पसे
वि समित किया गया नैमन निदोष और नैमन दोष ~~म~~ मार
यह जो फल है रुक दूसरी का है इस वास्ते मुम नैमन को मर
सजा का हुकूम हुआ है यह उदास और नियत के द्वार से
में देव किस पांच से फिर अपील करता है कि मेरा इन साफ
कर दिया जाय बिना पुरुष के ~~जो~~ बड़ा नहीं होता पुरुष के
जो जं से होता है यह चलाव पुष्पि में नहीं है यत्र इस बात
का फैसला न किया जाय जो न होवे तो मैं पुलिस थान से
खोज लूंगा ~~इ~~ इक्यात यह बात यह फल नैमन मित्र का है इस
में मुम को कुछ डर नहीं है इस लिए मेरा निवेदन जो गुर्जा
सुना जाय।

लि: नैमन तिका

वा: देवा स:

साकान तरा लोया, दोला पकर चौरा

ता: २३-६-१६२६ ई;

Dehkeela

Onkhasay.

maine ap kã bhejã

huwa liphaphã 12.6.20. ko

payã aur malum kya.

ap logon ke kãhe anudãr main

28.5.29 ko ek liphaphã ap ke
nam se bhej chuka hun.

agar us chitthi ko nahin
paye hain to main aur hi
bhej dunga. jab P.C. kã uttar
milega. par bhagybãsh ko
main us chitthi ko do se
bhejã hun. so maph Karenge.

age sheekh

ap kã A. Kuyar

Dehkeela

22-6-29.

Church Council

Received. 26. 6. 25.

Register No. 807.

Date. 22. 6. 25.

File. 5

WRITING SPACE

Reply No.

महाराज

Date 10th July के उत्सवों

दिन के लिये कृपा करके एक
बोटा उपदेश भेजें लिये भेज
देंगे तो मैं आपका बहुत 2
धन्यवाद करूंगा

A. Kujur
Master Dehkalai

INDIA



NO 08 11
62 JUN 29
GARD

ADDRESS ONLY



70

The
Secretary Lutheran
Mission Compound
Ranchi

श्रुत मान्यवार महाशय चर्च कोसल लुथेरन के मुक्त दोनहेन
अधम जन का बहुत योगदान होवे । -

जब ऐसा है कि मैश्चकेला जसपुर स्टेट में रहता हूं वहां पर
फ्रेड्रिक लकडा नाम एक मास्टर था, वह वहां ही १९२३ ईस्वी में इल्लिकाल
हुला, उसके लड़के वाले बड़े दाख तखलाप से वहां रहते हैं, मुझसे
उसकी बिचवा बहुत लम्बी थी कि रोजा दिवज से तुम्हारा जन
पहचान है रोजा बाबा का बन्दी बस्त करे लो और पाद्री बाब दाउद कुजुर
को जो इतना बिस्तावार है वह भी मुझको बोला कि उनके साथ लो
लो और जहां तक बने उनके लिए रोजा का बन्दी बस्त करे । मैं बराबर
उनके लोकर में था, वहां का मास्टर अब्दुल्लाह कुजुर इस बात
से सन्तुष्ट नहीं था, जिस रोजा को मैं उनके लिए रूप में देके बन्दी बस्त
करता था, उस पर तुरन्त कथा डाला लो और दूसरे को बिचाया ।
जब पैचाइत हुई जमीनदार खुद कोन्डरा के पाद्री बाब मनमोह
दोप्री के पास बोला कि तुम्हारा मास्टर ही तो ऐसा करता है ।
हमारे घर में दो लड़के बिमार थे, लो और मर भी गये, बिन्ती करने
के लिये बुलाया, पर वह मास्टर कभी नहीं लाया, मरने पर गाड़ने
के बुलाया, कभी नहीं लाया, यह तक्रार बहुत दिनों से चलता आता है ।
पाद्री बाब दाउद कुजुर भी यह तक्रार बहुत दिनों से बोला चला करे से
जानता है कि उनके पास भी वह बिखा पदी किया था,
अब अब्दुल्लाह कुजुर मुझको गिराने के वागते पूरे पैचाइत करके
मेरी मात से दोष लगता था, पर कोई सबूत नहीं पाया, लो और में
जब मैं लपकी बड़ी के गुमला स्कूल में गया था, तब उस समय

मुक्त के फन्द में गिरने के वाशते जसपूर धाना और गुमना धाना
में डायरी दिया कि डुम्फु सुलेमान तिकी और मोशोमात
भानोभित चपके से गर्भपात करने के जसपूर से शामोज चले
गये है और बिना कशूर मेरा बदनामी समूचे राज्य में करवाया।

लगावूर में पंच बैठके जबर जस्ती लाके होगा दिखवाकर
मोशोमात को करार कराता है कि तुम बोली कि मैं डुम्फु सुलेमान
से ककर्म किया है। पर मोशोमात पंच के सामने भी करार नहीं
कई पर करार किई कि एक संसारक बुध नामक आदमी से
वह काम किई है। वो सकता है कि अब दिया है मुक्त के फन्द
में गिरने के वाशते उसको जबर जस्ती से चलाया होगा कि
जब गर्भ रहेगा तो डुम्फु सुलेमान को गिरने से केवो।

पैचाइत हो मैं मुक्त के और मोशोमात को मंडली सजा दिया कि
कोई उनके साथ उठके बैठके न करे। पादो हमों को कोई
मंडली सजा लभो तक नहीं दिया है क्योंकि वह भी जानता है
कि अब दिया है बहुत दिनों से चल रहा है। एक आदमी को
जब मैं रंजी अपना दाख के हालत बताने गया तब बिना
कशूर उसे भी पूरा सपेया जरवान किया। वह बहुत लोगों
को अपनी राय में लाया है और मोशोमात के पीछे भी अपने
वरक खिंचा है कि अपनी माय से यह कबुल लिखा दे कि
मैं डुम्फु सुलेमान से हुं वो मुझी माय को मंडली भीतर केरे।
सो वह अपनी माय को दिन रात गली गुफता दो सिरार के
लिखाया है और उसका भाना जाना अब दिया है के धर में है।

यह संक्षेप बात मैं हजूर महाशय के पास जरूरी पेश करता हूँ कि कौंसिल चाहे कोई मेम्बर को भेजे और जांच करे।
 अब दियाह जसपूर स्टेट में भी खल वाजी का काम किया है-
 स्कूल घर के नाम से भाइयों से मंडली लिया और बनवाया और
 नाप के समय अपने नाम से नपवाया है। जसपूर दिवान तक
 यही बात पहुंचा है पर दिवान कौंसिल को आशा देखती है।
 जसपूर स्टेट में नाना प्रकार का गोल साल होगा और स्टेट का
 भी नाना प्रकार का शक होगा।

इसलिये मैं दोनता पूर्विक हजूर महाशय से जरूरी करता हूँ
 कि आपके जल्दी से इस बात का जांच किया जाय, मैं हजूरों की आज्ञा
 में हूँ नहीं तो अपने मात हानि के वाशते नजिरा करूंगा, मेरा
 कोई प्रकार का कशूर नहीं है, दूसरे का नजदी किया फंदा रखा गया,
 अब दियाह फिशल कर्मचारी हो कर नाना प्रकार का जन्दफन्द करके
 खेत बरि जमाड करता है और मंडली के भाइयों को बिगाड़ता है
 और मंडली देने जैसा जमा होना चाहिये नहीं होता है न जमा करने का फिकर
 करता है केवल अपने खेतों बरि के फिकर और चिन्ता में लगा रहता है
 न स्कूल का काम ठीक से करता, न स्कूल का ठिकाना है, मुफ्त में
 यह कौंसिल से तबय पाता है, हर बच्चा जसपूर नगर जाता लाता है।
 दोनता पूर्विक अनजाने कि जल्दी यह सब बात जांच किया
 जाय और फिसला सुनाई जाय जिसके वाशते
 मैं बहुत चन्दावा होगा।

आप लोगों का विश्वस्त आज्ञाकारी
 रही डुमकु सुलेमान तिकी
 ठेपा धनमान शायद

मोपुका - जानव

सो सी० - जो योगमहाध -

आगे अर्जुन है कि इस दारवास्त को बाल सफाई करना इसके
से होना - वडा भारी माजुम होता है - और कहा जाने मंडली में
भारी - तुफान भी उठेगा इस जाले में इसको विचार के
किरे - जो नही है को - इस इलाके का बेध मन होके
सोप. देता है - जो आइवै मंडली को मकाइ निकले -

माप - का -

M. Tomo.

Alondra

27. 3. 29.

भाप को मुक्त A. Kujar की ओर से

बहुत २ योसुसहाय ।

पाद्री बाबू मनमसीह टोप्पो की जो मरदुमसुमारि
ओर स्कूल हिसाब देने में मैं जो इनकार किया सो
केवल मेरी नराजता है इनके काम ओ व्यवहार से मेरा
मन प्रभु के काम करने में टूटता जाता था. यहां तक कि मैं केवल
स्वधीन होकर ही प्रभु का काम करने को मुसतफा था ना कि
उक्त पाद्री के अधीन,

मेरी नराजता का कारण बहुत है पर केवल थोड़ा लिखता हूं
I जबसे यहां मोसामत मनोनित की बात उठी (१९२८ के मंडल
लास पास से) तभी से १९२९ के आज तक भी इस मंडली में
स्नान प्रभुभोज नहीं दिये, ओर हमारे चोरा ओर धूमर कर
स्नान प्रभुभोज देते थे, ऐसे समय में हम मन से रोये ।

II मरदुमसुमारि ओर स्कूल हिसाब डुम्फू के घर में डेरकरके
मुक्त से भांजे थे, जहां सदा मेरे लिये जाल बिछा रहता है

III डुम्फू के वहिन की सदि ओ बचन दत्त बिना मेरे ओ पंचकी
चिट्ठी से किये, जो इलाके के नियम बिह्य था.

मैं अपने पुरोहित को कहां तक निन्दा करूं पर बात तो
सच है तो भी मैं हजार लोगों से मरजी करता हूं कि मेरी
गलती माफ़ की जाय ।

देन्दे हजार मा बाप हैं

माप लोगों का मयोग्य दास

Achhai Kujur

Master Ichkela

Jaspur State.

28-5-29.

No. 683/29
F.-5.

31st May, 1929. xx

To,

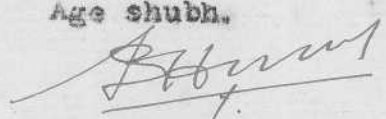
Pracharak Abdiyah Kujur.

Mauja Ichkela,

Jashpur state.

Paracharak Abdiyah Kujur ko Council ka
Yishusahay. Ap ne ap ke ilake ke Padri ko likha tha - "
"mardum sumari is mandli ka ap ni bana kar le jaiye Dumphu sab
ko puchh kar - School hisab wanni se bana liya jay" . Is bat ke
bishay men President aur Secretary donon jab Ichkela is mehina
ke arambh men gaye the tab ap ko bol aye the ki is ke bare ap
apni kaiphiyat jaldi Council ko bhejiye parantu aj tak wah
kaiphiyat nahin aya. Is karan se ap ko likha jata hai ki apna
uchit kaiphiyat shighar susamay men bhejiye.

Age shubh.


Secretary.

No 675/29.

27th May, 1929. X

From,

F.-5411.

~~P. Hursad, Esq.~~

~~Secretary G.E.L. Church~~

~~Chota Nagpur & Assam~~

Ranchi.

To,

The Bishop of Chota Nagpur

Bishop's Lodge, Ranchi.

Dear Sir,

I must apologise for the delay in replying your letter dated 27th April, 1929, as we wanted to collect further information on the subject.

1. Regarding Kondra you will agree with the C.C. that Premchand and his wife were excommunicated while they were still members of the Lutheran Church and on valid grounds which also your rules of excommunication uphold and therefore the time element should not make any difference. You will please excuse us when we refer you to Rev. Patras Lakra's letter dated 30.9. 28. from which one can easily gather that Premchand's case for excommunication was sub-judice though Premchand's version was that the charge of adultery against him was not secret but was known to everybody. In such circumstance the pastor could not have possibly suppressed the case or forgiven him privately. Premchand's case therefore appears

to be one which required thorough investigation. It is to be regretted that Rev. Patras Lakra visited Lutheran congregations and made investigations independently as if he were in charge of the Lutherans - a step which is clearly against all missionary propriety and therefore resentful. In your letter under reference you state that Rev. Manmasih Toppo in his letter of 14.10.28. did not mention such allegations against Premchand but Premchand's own words before Rev. Patras Lakra were such which go to show that there had been a charge against him, and we believe there was no necessity for positive proofs on the same. Besides this, Rev. Manmasih Toppo wrote to Rev. Patras Lakra on 14.10.28. that the question should be considered by yourself and the Church Council before the Lutherans are admitted to the Anglican Church - a fact which was sadly ignored.

If you will kindly read through the statement which Premchand and Purnprasad of Kuladuba made before our Commission and before a big gathering, we feel sure, you will refuse to take them. One of them (Purnprasad Toppo) said that by making an application to the S.P.G. they had committed an offence- " Ham S.P.G. jane ko darkhast diya is men ham dosh kiya," and another stated " Ham kam khojne ko gaya tha dharm khojne ko nahin". We do not think that these are justifiable grounds to join your Church. However, if we attach such importance to the so called liberty and freedom which endanger the life of a Church, not to speak of the life of an individual, we are, we believe, taking a responsibility which stands for the hard-heartedness of the people .

We are glad and thankful to learn that you have cancelled your visit to the affected area. However, we would now request you to withdraw the Pracharak from Kuladuba and stop the erection of the Prayer house as suggested by Messrs Lakra and John at your

first meeting with them. We believe that unless these two things are done all our efforts will surely be in vain.

2. Messabera Christians :- The report means that the trouble arose since the last settlement and the preparation for the present settlement intensified the quarrel. We feel that if your Pracharak of Ghaghri had not meddled with the affair, the Lutheran Christians would have had no trouble about Church matters. We hope you will kindly give a warning to each Pracharak not only in Messabera, but all over the field where we have to work together.

3. Sigidda Christians :- The Christians of Sigidda were not excommunicated but they had rendered themselves liable to discipline and for the fear of such action they began to attend the Anglican services and that also at the instance of Christochit and Jakariah of the S.P.G. The acts for which the people of Sigidda rendered themselves liable to discipline, are also condemnable by your rules of discipline. If you will kindly stop Christochit and Jakariah from the meddling, we are sure, the Lutheran Christians will stick to their mother Church.

4. Your reference to Masindas of Bamhni will receive our due attention.

5. Council's thanks to you for your report regarding the Lutherans of Kurid.

We are glad to learn that you have promptly expressed yourself to co-operate with us, for we fear that there is a lack of co-operation between the two Churches which is greatly hindering the growth of the Kingdom of God in Chota Nagpur.

I am enclosing for your reference a copy of letter sent to the Rev. M. Prehn by the Rev. Mansidh Purti, officiating Chairman of Burju Ilaka.

Yours sincerely
[Signature]

EXTRACT FROM THE PROCEEDINGS OF THE COUNCIL
OF THE G.E.L.CHURCH, CHOTA NAGPUR & ASSAM
DATED 29 17th APRIL 1929.

3. ^{Kondra} ~~ICHKELA-KEMTE~~ Ichkela Kondra ke Suleman Dumphu ne ek darkhast bheja tha ki wahan Ichkela men kitne pracharak log mil ke us ko bin praman ke mandli se bahar kiya hai. Ilake ke padri ne us darkhast ko Council hi ko saumpa jisten Council hi use safai kare. Is bishay par bishes dhyan diya ja kar bichar hua.

SANKALP: (a) Ki mandli saja jo padri ke bina hua hai so be niyam hua hai.

(b) Ki Ichkela bhi ^{usi} Commission ke ang jawen jo Chainpur-Kemte jayenge is Commission ka kam May mahine ke bhitari hi men ho jawe. Aur jadipadri Manmasih Toppo apne naye sthan men badli awen taubhi wah bhi Commission ke sath jawe.

Sd. P. Hurad
Secretary.

Memo No. 637 and 638/29
F. - 5

Dated Ranchi, the 29th April 1929.

Copy of the Council's Resolution forwarded to the Rev. ^{Sd. Kuyar.} ~~.....~~ ^{Sd. Lakra.} ~~.....~~
^{and Manmasih Toppo.} for information and compliance.


Secretary.

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

No. 560. / 29.
F-5

Dated Ranchi, the 25th March 1929.

So dark hast mere pais Ichkela ke Dampohu
Tuleman Tirkey ke pais se aya hai usko
main Rev. Manmasih Tappo ke pas bhi
deti hun kyunki Slake Chairman ke
dwara aya tha.

Padi sahib Rev. Dr. Kujur, Gumbha
ke sath main jake is bakhay par jaisa
agli chitthe ^{open} main likh chuka hun report dewan.

A. K. Kujur
Secretary.

Kanda File
F-5

MEMORANDUM SUBMITTED TO THE BIHAR & ORISSA
CHRISTIAN COUNCIL BY THE G.E.L.CHURCH CHOTA NAGPUR AND ASSAM, RANCHI .

-----***-----

It is with a feeling of sincere regret that the Council of the G.E.L. Church begs to place before the B. & O. Christian Council certain facts which will go to show that the relationship of the Autonomous Church with the S.P.G. in Chota Nagpur is becoming more and more ~~stark~~ strained.

It may be recalled that in 1918-19, when the question of a United Church in Chota Nagpur was launched by the S.P.G., the G.E.L.C. did not accept the idea of an amalgamation with the S.P.G. Eventually the N.C.C. appointed a Commission of Inquiry into the possibility of a Union. A party of this Inquiry consisting of Drs. Datta and Felt visited the western portion of the Ranchi district known as the Uraon area. These two members of the Inquiry on completion of their visit foresaw the danger that would overtake the Church's work if no restrictions - were laid against the spirit of rivalry of the S.P.G. They then said - " While amalgamation seems impossible at present, we feel the territorial distribution between the S.P.G. and the Lutherans ought to be arranged. The Western half of the the district might be made over to the Lutheran Church." (Vide Report of the Commission of Inquiry PP 14 & 15.)

Now neither the Advisory Board who in those days acted as the medium of communication with the outside bodies, nor the B. & O C.C. took this recommendation seriously, with the result that the S.P.G. who have always been looking for an opportunity took advantage of disaffections and quarrels within the Church in several of its villages and in this way received during the past years members of the Lutheran Church into the S.P.G. We give below some of the names of the places where the S.P.G. admitted the G.E.L.M.C. peoples during the past years:

1. Lohardugga Ilaka - Tilsiri, Kairo, Utka, Garhatoli, Senha & Khorkhorhatoli.
2. Kinkel Ilaka - ^{Bakrikona} ~~Tipkapani~~, Karaigura, Khinda & Sawai.
3. Rajgangpur.
4. Ranchi Ilaka - Malgo.
5. Govindpur Ilaka - Ulung and other places.
6. Burju Ilaka - villages near Tapkara.
7. Kondra Ilaka - ~~Tipkax~~ Kuladuba etc.

It is natural in any administration political or otherwise that there are
parties

parties and factions . We might daresay that almost all missions and Churches have their internal strifes and factions. We submit that in such strifes outside bodies should not interfere on any plea, the more so because we are workers in the same vineyard. Any interference from outside is sure to tell upon the discipline of the Church. It is on this ground that the delimitation of territories is essential in Chota Nagpur where there is the spirit of rivalry or else the interference of the non-cooperating mission will destroy the very foundation of the Church's fabric.

We beg to bring to the notice of the Council that in 1927, the G.E.L.C. found it necessary to come to a friendly understanding with a view to carry on mission work with the S.P.G. more harmoniously and negotiations were opened and as the result of it it was settled that the Rules of Comity as approved by the N.C.C. in 1916 be accepted con amore. In addition to these there were certain Rulings offered by the Bishop of Chota Nagpur which were embodied in the Proceedings of the Annual General Conference of the G.E.L.C., a copy of which is enclosed for ~~xxx~~ the Council's kind perusal.

We wish to point out that in several cases such as at Malgo, Kondra and elsewhere there have been our Church members who were put under discipline or some such measure as to render them liable to discipline and they were admitted into the S.P.G., without any reference to the G.E.L.C. Council. This is clearly against the accepted Rules of Comity as laid down in the N.C.C. Proceedings of 1916, Item VIII which reads thus - " That when a ^{my} member of one Church desires admission into another ,if on enquiry it proves that he is under discipline, for a grave fault against the moral law of Christ, his admission would not , as a general rule , be considered etc."

Further the Reverend Bishop of Chota Nagpur says that he always observe the steps which he told Mr. Cannaday and others of our mission. Section 4 of the same "steps" enjoins that higher authorities be given notice . But we regret that the Reverend Bishop consciously failed to give any notice whatsoever to the G.E.L.C. of his intention of admitting the Lutherans of Kuladuba in Kondra Ilaka only last month and in this area there has been no work of the S.P.G.

We are afraid the policy of the S.P.G. has been one of clear overlapping over the G.E.L.C.'s work and founding their congregations mainly by proselytising the Lutherans - a policy which St. Paul the greatest of missionaries disapproved and said : Lest I should build upon another man's foundation." The present

present Bishop of Chota Nagpur just 10 years ago declared that our theological differences were trifling but it is simply surprising and disappointing that he should now follow the policy of proselytising. He in 1919 said : "In these four years I have become thoroughly familiar with Lutheran teaching and practice . Our differences are trifling * * * We throw no slight or doubt whatever on their baptism or confirmation."

Now we wish to submit in detail the incidents which led to the latest admission of Lutherans of Kondra in the S.P.G. by the Bishop of Chota Nagpur. We have materials to prove the statement we make .

One Premchand Ekka a Lutheran was employed as a school master and also as a catechist at Tipkapani but soon after for several reasons and chiefly for fabricating a letter of resignation purporting to have been written by Ignatius Ekka and also on charge of misconduct he was deprived of his position by the Village Panchayet. Being thus humiliated he went to the Rev. Patras Lakra of the S.P.G. Kinkel and told him that if he could provide him with a job he would become an Anglican. Pastor Patras Lakra told him he could not help him but if many would become Anglicans some would certainly get employments. Now this Premchand knew very well some of the people of Kuladuba and Taraloya who were displeased with the Lutheran pastor of Kondra. So he visited them and induced them to petition the S.P.G. to take them. Obtaining their consent he wrote out 3 ~~petitions~~ petitions and got the signatures of the peoples and took them to Kinkel to the S.P.G. pastor on 22-8-28.

On 24-8-28 the S.P.G. Pastor notified the Lutheran pastor of Kondra regarding the intention of these people to join the S.P.G. After this the people of Kuladuba and also of Taraloya notified their pastor on 19-8-28 saying that they were leaving the Lutheran Church and going over to the S.P.G. Further without waiting for a reply from the Lutheran pastor the S.P.G. Padre visited in September the peoples of those places with the same Premchand. He visited our Lutheran area and at the same time made independent investigations amongst the discontented people, which he had no right to do without our pastor's permission and without his presence. This undue interference of the S.P.G. has now become intolerable in our field - a step which is against the principles of missionary propriety. Now the S.P.G. pastor forwarded the result of his partial investigation to the Lutheran pastor of Kondra as if he were the accredited representative of a Commission of Inquiry.

The Kondra pastor thereupon reported the matter to the Church Council

Council whose Officers visited Kondra and the disaffected places and held a Panchayet. It was found that these people had clearly misunderstood their pastor and had far exceeded their criticism of him though they themselves were mostly at fault. In the Panchayet it was found that these disaffected people had seen and recognised their mistakes and expressed their regrets and promised to remain within the Church.

Now the Church Council thought that the quarrels were made up and the splits were patched up when all on a sudden it was learnt that the Bishop was due at Kondra to confirm the Lutherans in February. But we could never for a moment think that the Reverend Bishop would consent to take such a course without informing the Church Council- a step which he promised to observe.

Being impatient, however, we opened correspondence with the Bishop on the 19th of February, but he had already left for Kondra the previous day. We were further disappointed from his letter of 24-2-29, as he had gone beyond the 'steps' which he promised he would observe.

We wish to make it clear that now the S.P.G. by their system and policy of proselytising are trying to overlap the whole of the Lutheran field. It is high time now that the B. & O. C. C. should use its good influence to check the policy of the S.P.G. If this august body which took so great an interest in the AUTONOMY of the Lutheran Church should fail in their obligation to give this Church their moral support, it is evident that the ideal of self-administration which is being tried in the G.E.L. Church in Chota Nagpur will be suppressed and ultimately killed before the spirit of rivalry of the S.P.G. and thus create in missionary circles an undesirable atmosphere unhealthy for the spread of the Kingdom of God in this country.

In conclusion we beg to propose the following for your kind consideration and expression of opinion :-

1. That as the people at Kuladuba (Kondra) pledged to stay in the Lutheran Church and it is only by deceiving the G.E.L. Church Council they went over to the S.P.G., the Reverend Bishop of Chota Nagpur be requested to cease his ministry to them at once and the G.E.L. Church will look after them and settle disputes, if any.

2. That the B. & O. Christian Council kindly determine the spheres of activities of the two bodies as recommended by Drs. Datta and Felt of the Commission of Inquiry appointed by the N.C.C. in 1919 who visited the western part of the Ranchi district.

Self- J. Topono.
President.


Secretary

Self- Mr. Achin
Treasurer.

The Council of the Cassner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845. — Autonomous 1919.]

OFFICERS & MEMBERS OF THE COUNCIL.

- | | | |
|---|--|--|
| 1. * <i>President</i> — Rev. J. Topono, Ranchi. | 6. Miss F. Heintze, Ranchi. | 10. D. M. Panna, Dy. Magte: Hazaribagh. |
| 2. * <i>Secretary</i> — P. Hurad, Ranchi. | 7. A. L. Tirkey, High School, Ranchi, | 11. Rev. Isaac Ecka. |
| 3. * <i>Finl. Secy & Treasr</i> — Rev. M. Prehn, Ranchi. | 8. Obed Minz, B. A. | 12. Rev. A. John, P. O. Kinkel, Ranchi. |
| 4. * Rev. J. Lakra, M. A., B. D., S. T. M.
Principal, High School, Ranchi. | 9. H. D. Horo, Sulungi, P. O. Karra, Ranchi. | 13. Rev. Marcus Topono, Jarakudar, Panposh,
B. N. Ry. |
| 5. * Rev. B. Minz, L. Th., High School, Ranchi.
Those marked * constitute the Executive. | | LUTHERAN COMPOUND.
RANCHI, (Behar.) |

No. 550/28.
P.- 5.

Dated the... 8th. March 1929,19.....

To The Rev. J.Z. Hodge.
Secretary, B. & O. Christian Council.
P a t n a .

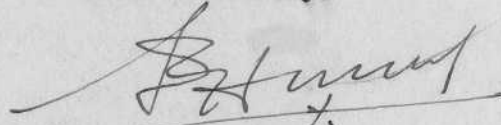
Reverend Sir,

I am desired by the G.E.L. Church Council to forward to your Council a copy of the Proceedings of the Annual Conference, 1928, and to invite your kind attention to Item 7 (k) (i) & (ii) PP 2 & 3 of the same regarding the S.P.G.'s relations with the G.E.L. Church.

2. I am further directed to submit to your Council a Memorandum on the situation at Kondra where the Lutherans were recently made to change their Church affiliation owing to the undue interference of the S.P.G.

3. Copies of correspondence that has passed between the G.E.L. Church - Council and the Bishop are also enclosed for your Council's kind perusal and information. Other papers and documents connected with this subject will be produced if required by the Council.

Yours sincerely,


SECRETARY.

G. E. L. Church .

Church Council
 Received... 2.3.29
 Register No 571...
 Date... 2.3.29
 File... V
 Reply... Sir
 Date...

at from Bishop's Lodge
 Rauchi
 2-iii-29

In response to my very civil letter, in which I invited you to call & discuss the Kondra matter I was surprised to find from you, when I went into Rauchi yesterday for that purpose, a letter containing what you evidently meant for a threat. So far as I am concerned that ends the correspondence.

Yours faithfully
 Kenneth Chata Nagpur

Mrs P. Hurad

The Council of the Cassner Lu. Lutheran Church in Sholanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845. — Autonomous 1919.]

OFFICERS & MEMBERS OF THE COUNCIL.

- | | | |
|---|--|--|
| 1. * <i>President</i> — Rev. J. Topono, Ranchi. | 6. Miss F. Heintze, Ranchi. | 10. D. M. Panna, Dy. Magte: Hazaribagh. |
| 2. * <i>Secretary</i> — P. Hurad, Ranchi. | 7. A. L. Tirkey, High School, Ranchi, | 11. Rev. Isaac Ecka. |
| 3. * <i>Finl. Secy & Treasr</i> — Rev. M. Prehn, Ranchi. | 8. Obed Minz, B. A. | 12. Rev. A. John, P. O. Kinkel, Ranchi. |
| 4. * Rev. J. Lakra, M. A., B. D., S. T. M.
Principal, High School, Ranchi. | 9. H. D. Horo, Sulungi, P. O. Karra, Ranchi. | 13. Rev. Marcus Topono, Jarakudar, Panposh,
B. N. Ry. |
| 5. * Rev. B. Minz, L. Th., High School, Ranchi.
Those marked * constitute the Executive. | | |

LUTHERAN COMPOUND.
RANCHI, (Behar.)

No. 544/29....
F. 5

Dated the 1st March 1929.....19.....

The Right Rev.
The Bishop of C.N. Pur.
Ranchi.

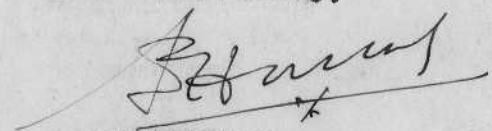
Right Reverend Sir,

In continuation of my letter of yesterday's date on the question of Kondra Lutherans, I hope we shall come to a good understanding and settle the matter amicably between us but failing this and if we do not hear favourably from you by the 3rd. of March. the Church council think they shall be obliged to place the matter before the B. & O Christian Council.

I beg to remain.

Right Reverend Sir,

Yours sincerely,


SECRETARY.

342/29.
P.- 5

26 February, 1929.

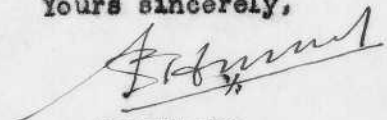
Dear Bishop,

I extremely regret that you did not let us know anything whatever of your intention of receiving the Lutherans of Kondra. Your letter states that you learnt only from Mr. Harris that we had entirely failed to make up the quarrel at Kondra. I wonder if Mr. Harris has any foundation of his statement for the fact is quite the opposite. We have in possession records signed by the disaffected - people who regretted for their action and went so far as to say that they had committed an offence in petitioning the S.P.G. to receive them. I think according to the same Rules of Comity to which you refer you ought to have written to the Council of the G.E.L. Church before you took the final step on the report of Mr. Harris, who I think has distorted the fact. I am glad to note that you in your letter ^{to please} observe the 'steps' which you told Mr. Cannaday and the others of our Mission', but it is indeed surprising that you went beyond those 'steps' in your present action, for No.4 of the same steps reads thus :-

" That in case of any disaffection due notice should be given by the party to whom application has been made to the other party concerned. This notice should be given first locally, as for instance, by one pastor to another pastor, and finding an adjustment of the difficulty impossible notice should then be given to the - higher authorities."

Now I appeal to your good-will that in the name of the only Head of the - Church, you will be able to see your way to give up your ministry to all those people in Kondra Ilaka for whom the Lutheran ministry has always been quite sufficient and according to their own statement under signature they are quite - satisfied.

Yours sincerely,



SECRETARY.

Church Council

Received... 25.2.29

Register No. 566

Date... 25.2.29

File...

Reply No...

Date...

on 24.2.29

Mr. Hurad

I am sorry that if there is any hope of the quarrel between the people near Kondra + your mission being made up you did not write to me sooner. For I was most unwilling to receive them, + have at every stage since the matter was first laid before me (I think in June last, but I am not in camp + cannot verify date) urged that no encouragement should be given them + that the fullest information should be given to their Pastor. It was only on hearing from Mr. Harris that you + others from Ranchi had visited them + entirely failed to make up the quarrel that I consented to their reception. I at the same time rejected the petition from some neighbouring people where it seemed to me they were only coming in hope of gain. But I must trust men as far + so long as I observe the signs which I told Mr. Cammatt + the others of your mission I always seemed observe I cannot pledge myself never to accept people when there is no offence proved for which we should

W. J. W. W. W.

Church Council
March 22, 1902
Page 102

24 communicate.

I shall be in Ranchi on Friday March 1st, &
shall be quite ready to talk the matter over
with you if you care to call about 4 P.M.

Yours sincerely

Kimathi Chotahagpur

535 /29.
P.- 5.

Ranchi.
19th. February, 1929.

To The Right Rev. The Lord Bishop
of Chota Nagpur.
Ranchi.

Dear Lord Bishop,

We have recently been informed that a few Lutherans of our Kondra Ilaka wish to join the Anglican Church through Rev. Patras Lakra of Kinkel who has been visiting them every now and then. We know this as we had seen some of his letters.

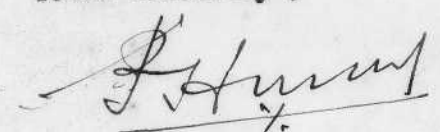
I should like to mention that the officers of the Church Council visited Kondra in the beginning of November last and held a Panchayet there. It was found then that some of our Christians were dissatisfied with the Padre inspite of the fact that they themselves were at fault.

Now even if the information given to us be correct, we hope you will not think of receiving them until you hear about them from us. If you think it worth while we should be very much pleased to talk this matter over with you.

I beg to remain,

Dear Bishop,

Yours sincerely .


SECRETARY.

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

President's Dept

Memorandum.

Ranchi.
21 January 1929.

EXECUTIVE MEMBERS.-

Please see the annexed letter of the Kondra pastor. It is an awful matter, that we want to straighten out our difficulties while the Anglican Bishop unnecessarily interferes and posts a catechist in our field without consulting us. The Kondra people promised not to leave the Church, but this interference of the Bishop and his Padre spoils all our endeavours at reconciliation.

I should think that we arrange for a meeting with the Bishop and have a frank and straight talk with him.

Prompt action
must be taken
by the affair because
Prompt action needed H. H. may
take up the matter on Wednesday

Read. P.m. 21.1.29.

Kondra Pastor's letter of 17.1.29
sent to President to write to Bishop

President

main Kondra' ke hal' kai kagaj ap
ko bhijtai hui, parson C.C. ne
bichai kiya' ki is ke bishay mein
Bishop ko likhai jaye ki uske
sath ek meeting kiya jaye aur
wahin ki dasthai ke baad mein
bachit hove. So ap Bishop
ko chitthe likhiye.

S. S. S.
24.1.29.

Ohurch Council

Received 21/1/29...

Register No... 480

Date... 17.1.29...

File... 5

Reply

Date.....

Kandra 17.1.29.

Shriyukt-Mahashay!

apko yisus chay.

Main Council ki or se hukum bheji
hain patri hai, uske motawik Patras
Padri ko likhne + mandli mein bhi jake
jo kam karna hai karungi - Par aapko
ki Bishop Sahile Martin nam ek Pracharak
ko Kuladula bhej diya hai Sale dostkhat
dene hase apne Matlap mendrili hain
aur Bishop Sahile February mein unpar
hath rakne ko awaz aisa hi dusron
se suna hai, isse we apne Matlap
mein drili hain aur apne dostkhat
ko schod bhi kirkel bhej diya hai.

Ap ka Dks

M. Toppro.

20

The Secretary
Lutheran Church
Ranch

Church Council

Received 12/11/28

Register No. 358

Date 12/11/28

File 5

Reply No.

Date

श्रीमान बहजूर नानाब कौंसिल ग्राहब को

हम सबों का प्रिय सहाय

See Gum
File. Rs 100/-
21/12/28

हजूर हम बिकेरा के सात भाईयो का हाल-
बहुत

ही साराव है अर्थात् जगामे न हमों को जो कसूरवान्त
नहीं है कसूरवान्त ठहरा का ता: 2-11-28 में सातो को
दोनो सजा दिया। अर्थात् एक बर्ष म्याद और की कादमे
100 रुपैया जुमाना किया और उनको जे हेल में रख दिया
अब हम उनके लड़के जो है सो सब निराशत कब है।
जो कुछ रुपया पैसा घर में था सो और उसके अलावे
पैंचा उधर भी किये थे सो सब उसी में खर्च हो गया अगे
अपील करने के लिये हमारे पार रुपैया कुछ नहीं है
और न कहों पैंचा उधर मिलता है। खोज 2 कार हैरत
हो गये। सो की दबीघान लाचार हो कर बैठा है। पार
अगर उनके ऐसा ही छोड़ देंगे तो घर की दशा जो अभी
है उससे ऐसा बे हाल होगा कि बर्षान करने के जोग
नहीं है न तो घर में कोई काम करने वाले है न तो कोई
देख भाल करने वाले है। अगे और पीछे कोई मुर्छि
लेने वाले नहीं है हाथ! हाथ ऐसी दसा में हम को अपील
करना बहुत ही जरूरी है। इस लिये तबेदार का जो
मण्डली का अङ्ग है। हजूर से जो मण्डली का शिर है हाथ
जोड़ का यही बिनय करते हैं कि अगर हजूर हमारे
ऐसी दशा में अपने मन में दया पिघला कर नजर करते
और रुपया पैसा का बन्दीवास्त करते तो हम गरीबों का
उपकार होता। आशा है कि हजूर हमारे दुर दशा में
मेहरबानी कर के नजर करेंगे।
अगे हजूर आनन्द दाता जो उपाय बताने वाले को
मुलुका मालिक है।

संस्कृत-विभाग (महाराष्ट्र)
संस्कृत-विभाग (महाराष्ट्र)

सहो कल्याण विन्डो
बिरेकेर बः खः

ता: ८-११-२८ ५

निर्मल कुजुर
बिरेकेर

ता: ८-११-२८ ६

नैरीनतियुस कुजुर
बिरेकेर

ता: ८-११-२८ ७

forwarded to the C. C. J. Zepher.

12-11-28

70th Council of Gassner
(Lutheran) mission Ramehi

San Francisco (Calif) C. C. Gassner

18-11-98

511-11-15

1914

1914 1914 1914

511-11-15

1914

1914 1914

511-11-15

1914 1914

1914 1914

No. - $\frac{355}{F. 5}$ /28

30th Oct.

1928

Piyare Manyawar Padri Babu Manmasih~~h~~ Toppo ap ko Council ka
Yishusahay.

Bishes bat ap ka Report jo S. P. G. janewalon ke sambandh
men mila. Council ke padadhari log is bishay par dekh bhal karne
ke liye anewale Sombar 5 tarikh November ko niklenge aur 6 tarikh
Mangalbar ko Kondra pahunchenge, so ap Ilaka Panch ko bulaiye aur
un S. P. G. honewale bhaiyon ko bhi bulaiye aur Patras Lakra
padri ko bhi ap hi hal dijiye, kyonki uske sath men ap ki likha
parhi ho chuki hai.

Nadi men motor par karne ke liye kripaya admi jama
kijiyega.

Yishusahay.

Age shubh

Sd. P. Hurad.

Secretary to the Church.

Copy

क्रि.श. १४-२०-२८

जीमान चर्चकों मिलको मनमसी टोपों का चौकुसहाय। —

आगे खबर है कि जोन्डा इलाका के जितने मंडि लोग
अंशोनी में डली में मिल जाने को दरखास्त किया है उनका
दरखास्त और पचास पाद्री का चिट्ठी भेज देता है। —

उसमें आप लोगों को साथ मालूम होगा कि वे मेरे ही
कारण से-जाते हैं इसमें मेरी अर्जी है कि आप लोग सामिल
विशेष सहित के पास जाकर जांच कीजिये और जो
उचित हो कीजिये-मैंने यह बात पचास पाद्री के पास से
लिखा है कि उनको लेने के धरिले विशेष और कौमिल
का विचार अचार होवे। — जोन्डा वर मेरे

गौरहाजरी में आकर जांच कर चले गये और आचना
में भेज दिया- जितनों को लीजरी देने का बादा किया
और समय में निरूपण किया लेने का। — इससे वे
समझाने पर भी अपने ही मत में ठहरे हैं मेरे पास
हमारे ही राज पर चलने के ऐसा कोझते हैं और
उनके पास उन्हीं के समान-जो दोष पुत्र पर लगाते हैं
मेरे को बल लगाव को बात है। जो टोनों में चर्चित
हो निश्चय जो और आंख लगाये हैं प्रायः हर एक जगह
में कुछ न कुछ झूठ बनाव को बात उठ रही है यानि से सब
बात पगल होगी इस वास्ते मेरी अर्जी है कि कौमिल
इस बात पर विशेष ध्यान देवे — — —

आप लोगों का आशावादी
दास

ज. / मनमसी टोपों

जोन्डा

Copy

Tipkapani

मान्यवर महाराज जोरसर। इला जाले पादो
सा हो मनमसीह जो योशुसहाय —

लिखने जा जाया यह है जिमें अपने जो
जनाता हूं जिमें अपने परिवार साथ अपने
आजके तारीख २६-२-२८ से अपने पुरानी
सूखे रान माली से खला होकर अंतोनी
माली में मिल जाता हूं ।

sd/ प्रेम चंद लख्खर रिपुभापनी
sd/ मोहन लख्खर रिपुभापनी
sd/ जोहन रोको केअर sis

Copy

गुलादुवा

मन्यावर महाराज जोन्स इलाहाके पाद्री साहेब
मनमसिह जो योमुसलाय लिखने जायाया यह
है जिमें अपने जो बनावा हूं जिमें अपने
परिवार साथ आज के तारीख १६-८-२८
से अपने पुराने लूयेरान मरहली से खला
हो जाय अंग्रेजो मंडली में भिजेजावा हूं

ॐ सही: पूरा प्रसाद होयो गुलादुवा

ॐ सही: मसीह प्रभाश बरहा गुलादुवा

ॐ दाऊद जुन्नर गुलादुवा

ॐ गुनाम होयो गुलादुवा

ॐ दाऊद जुन्नर गुलादुवा

ॐ सलोम मिंन गुलादुवा

ॐ प्रभुदास मिंन गुलादुवा

ॐ महाय होयो गुलादुवा

ॐ प्रभाश होयो गुलादुवा

copy

दा. ला. पा. २-६-२८

मया वर महाराज इलाका के पाप्मे सहित
मनमसिह को पेशुमहाय लिखने का आग्रह
रह है कि मैं आपने को जनावाँ कि मैं आपने
परिवार साथ आपने के वारिश ६-६-२८ से
आपने पुरानी लुपेन महल से अलरा
होना अंगरेजी महल से में जानाई

sd/ जुहल निरजी वरलोय

sd/ स: मानवेल - जुह

sd/ महलवांस खेम

sd/ मयलमन निरजी

sd/ सा: खेजुव जुह

sd/ लि: विस्त जुहल निरजी

वरलोय

sd/ मुनिवांस निरजी

Copy

मिनोवेल
24-8-28

मान्यवर पाद्री मानमसीह को प्रीतुमहाय

लिखने को जसूर के मोह के प्रप को दलजा। जो सरावे रिपभापाने
और जो सरा के लिलने आई अंकोजी मंडली में राह्या मिथे जाने का
प्रजा मेरे पास मेरे हैं। सो आप को जनावा हूं। जिते वे समुआये को
जुमाये जावे, जिते वे आप को पुरानी मंडली में रहे।

आप को सहभागी
सोचन

Sd. Pathras Lakra

मानवस्य पादौ मनमसीह दोषो नो येषामस्य ।

अप्युक्तं किं अप्युक्तं में अप्युक्तं किं चिह्नं दियो या, लेखिन अखलों को ज्ञात
में न पाया है सो मैं अभी दूसरी लिता उसी काल के बारे अप्युक्त को अप्युक्त साधन लिखता हूं कि
अप्युक्त के मेहरवानी से इस खोजने वाले नो बेकार महीना न भुक्त य 2 पूर. नम भुक्त को ई
जावा अप्युक्त से मिले जिसमें अप्युक्त में मैं हूँ ना।

अप्युक्त को ज्ञात कि अप्युक्त के अप्युक्त दिवस के तीन जगह के लुचरान भाई
अं दोषी मंडली में मिलने को दरवाजा दिख है। जिस पर मैं जा के उनसे पूछ पाछ किया
कि इ चाल खाने का क्या कारणा है जो बायो भुक्त से कहा गया सो मैं अप्युक्त को ज्ञात
हूं कि अप्युक्त उनसे 10 चीज पर उनको फिर अप्युक्त अप्युक्त मंडली में समेट लिये।

दिय अप्युक्त पानीसे-2 हम लोगों के लिखे भावर और अप्युक्त को लिखे प्रवचन नहीं
2 मंडली के मलामती वस्ते उचित दिवस नहीं।
कि 3135 को 2 लड़के लड़कियों के लिखा वस्ते को ई प्रवचन नहीं

प्रेमचन्द प्रचारण-इसमें बारे में मैं सीधे कहूँ इसको जानना अप्युक्त ज्ञात पडा है
इसलिखे जोर को सुना सो को अप्युक्त को ज्ञात हूं कि हमों को मालुम हावे
प्रेमचन्द का क्या न है मैं अनुहार नहीं हूं कि कल मावर हमारे आम को लुटने

लेने की इच्छा से ऐसी को लिखे लिखा कि अप्युक्त और भाईयों को उमाडा और पंच बैठ जोरवारी में
पुर्वाना लिखे। लिखने भुक्त ज्ञान जिसा खोजे थे, मैं लपट हो चुपचा और पुर्वाना दिया। बाव पाया
कि भुक्त अप्युक्त अप्युक्त ज्ञात को, कि भुक्त को ज्ञात मावर सो अप्युक्त को ज्ञात को 2 पादो को
कहने से मैं खससी पाट खिजाया इसमें काद भुक्त कदली लिखे आम चलने न लग
अप्युक्त इसमें जो पादो में नो ज्ञात पर भुक्त अप्युक्त न दे लगे ये सब को लिखे हैं
भाई और भुक्त में हूँ। ऐसी दुर्दवा देख मैं अपने पुराने मंडली को जो 5 अंको ज्ञात मिशन में
जाने को जाना और 26-2-22 को मैं अप्युक्त दिवस दिवस पादो भुक्त को समझने
को ज्ञात। लेखिन मैं अप्युक्त लिखे तब पादो भुक्त से को लिखे को भुक्त 5 डार में लग कुत्ता है ज्ञात
रस्सी पर ज्ञात गा, तब भुक्त भुक्त में गिर लपट पड़ेगा। मैं ज्ञात दिया कि होवे-बाद 26-2-22
को पादो मावर को चिह्न देके भुक्त मंडली सजा में रखा, भुक्त को ज्ञात गया कि तीन दोष लखाया
गया नो इसमें- 1- 6 को अप्युक्त के लिखे 2- अप्युक्त (मिथा लिखाम) में लिख 3- कल ज्ञात
है। फिर भुक्त अप्युक्त मंडली सजा मिला और उन लिखों को नहीं।

प्रेमचन्द के बारे इन बातों को सुन लिखने भाईयों से मैं पूछा कि इसको मानते हो
लिखने प्रारंभ लिखे नहीं, लिखने को लिखे कि हमों के लिखार में जो पादो इसको आम न
लिखे, अप्युक्त सजा देते तो वही समझ देते अप्युक्त को वल उसका रसा वन्द ज्ञात को वरसे
दिया फिर लिखों को नहीं।

गुला दुवा - पादो अप्युक्त को ज्ञात नगर से अप्युक्त को दूसरे नगर से देखता है
भाईयों का चही कहना है - 2 पूर अप्युक्त और भुक्त के लिख ज्ञात को बारे मो ज्ञात
हुता और अप्युक्त नगर है सो पादो और ज्ञात चारी सब के उम्र ज्ञात और मदत से हुता है।
2. ज्ञात ज्ञात नगर से पूर अप्युक्त को लिखने नगर के तब दूसरा उपाय खोजने लगे
अप्युक्त इसी कति रंघ में पादो मावर अप्युक्त अप्युक्त को गुला के अप्युक्त हल में रखे
अप्युक्त ज्ञात पुर 2 से दास लाने वालों के जोर ज्ञात में लग गये जिसमें नैमन मावर
अप्युक्त भुक्त जो साध में थे, भुक्त ज्ञात दास को ज्ञात अप्युक्त या तब चही ज्ञातों लिखा के
अप्युक्त अप्युक्त और हल में 110 मर अप्युक्त को ज्ञात में वन्द पर खपवाये, इसमें दिन ज्ञात
अप्युक्त अप्युक्त को ज्ञात अप्युक्त अप्युक्त अप्युक्त लगे तो अप्युक्त को लिखने लग कि देखो
भुक्त लोको का पादो भुक्त है, कोलवा है कि यदि अप्युक्त को ज्ञात तो हम लोग अप्युक्त पर
कोस खडा कोरों-इस अप्युक्त भुक्त मा चलवा के 2 पूर को पुर्वाना दिया और सन्ते है
कि पादो मावर इ नाम पाये है। सो पादो के ऐसी 2 को देखने से ऐसी मालुम हावे है

बाप को पादों के हाथ में रखने से कोई रोग नहीं जोरिम में डालना सोच रहा है
कि उनको हाथ से निकाल जायें ॥

प्राचीन - पण्डितों इलियस और गालोस के मंदिरों के बीच प्रणवनाव है।

२-इलियस पण्डितों पंच और प्रणवना के रास्ते में डल्ले सन में प्रणव
गया सो उसे में डल्ले से सनव न ले जोरिम में उसको में डल्ले राहवा किया

इसका जो २ मीटरी पारवा होता।

२-इलियस जो में डल्ले सन पले पण्डितों से प्रणव प्रणव

डल्ले में निजना प्रणवनाया, वहां पण्डितों वह सन और प्रणव मोल वास्त
जाना है ३

३-मंगलवास के मुकदमा में इलियस और पण्डितों गवाही

इस और प्रणवसे इलियस में पण्डितों सनव हुआ सो डल्ले सनव नहीं

४-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

५-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

6-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

7-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

8-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

9-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

10-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

11-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

12-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

13-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

14-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

15-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

16-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

17-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

18-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

19-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

20-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

21-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

22-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

23-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

24-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

25-मंगलवास के मुकदमा में इलियस में डल्ले राहवा किया गया ॥

THE COUNCIL OF
 the Evangelical Lutheran
 in Chotanagpur & Assam.
 RANCHI. (Behar) INDIA.

Memorandum.

Executive Members.

Please see these papers from Kondra. I think the matter is very urgent and should be dealt with at once. Let us meet sometimes next week say on Thursday next. I think that the Executive at least should visit Kondra and settle the matter. More when we meet.

19/10/28.

Dec. 7. Top mo. 1 reach.

Scanned by: P. Wilson. 20/10/28.

A delegation should at once
proceed to the affected
area. It is urgent.
Further action required.

कोन्डरा १४-१०-२८
ओमान चर्च कोन्सील को मनमसोह टोप्यो का-
घोषसहाय ।

कागेरववर- है कि कोन्डरा इलाका के कितने भाइ
लोग- मंगेजी मंडली में मिल जाने को- दरवास्त
किया- है उनका- दरवास्त और पधारस पादु को-
चिह्न भेदेता है ।

उसने आप लोगों को साफ़ मालूम होगा-
कि वे मेरे ही कारना से- जाते हैं, इससे मेरी कज्जी
है कि आप लोग- साक्षी-विशेष साहेब के साथ
काकर चांजला जिधे- कोर जो उचित हो
को जिधे- मैंने- यह बात- पधारस पादु के पास
भी लिखा है कि उनको लेने के पहिले विशेष
और कोन्सील को विचार साधार होवे-
ज्या कि- वह मर गौरहजरी में काकर चांज-
लर चल गये और कराधना भी भेज दिया
कितनों को नोकरी देने का वादा किया-
और समय भी निरूपरा किया लेने का-
इससे वे समझाने पर भी रूपने ही मत में ठहर
है- मेरे पास हमारे ही साथ पर चलने के ऐसा बोलव

और उनके पास - उन्हीं के समान - जो दोष मुझ पर लगाते
 हैं सो केवल - लगाव की बात है। जो दोनो भी मे
 प्रकृत हो मित्रन की और और खलगाये हैं। प्रायः हर एक
 जगह में कुछ न कुछ कलवनाव की बात उठ
 रही है। आने से सब बात प्रगट होगी। इस वाले
 मेरी कज्जी है कि को सोल इस बात पर विशेष
 ध्यान रखे -

आप लोगो का आझाकारी
 दास

मनमसीह दोषो

कोलुरा -

Church Council
Received 18/10/28
Register No. 338
In. e. 14/10/28
til 5
Rep. y 20
Date

६ अक्षर
७ ११५५

प्रभुदास मित्र
७ ११५५

मन्मथ मित्र
७ ११५५

सहाय रोषो
कुल १५

प्रकाश मित्र ७ ११५५

कुलाहुवा

मन्नावर महोदय कोन्दर इलाका के पट्टी
सहेव मनसमीह को चेखु महोदय लिखने का
करणा यह है कि मैं अपने को जनाता हूँ
कि मैं अपने परिवार सावा बाजा के तखि रून्-र
से अपने पुराने लुचेरन मण्डली से अलग
हो कर अंग्रेजों मण्डली में मिल जाता हूँ
सही पूरे प्रसाद मेको कुलाहुवा

मोसिप्रकश वरणा कुलाहुवा

कुलाहुवा

मनसमीह
कुलाहुवा

Tipkapani

मन्यावर महाग्राम कोन्डा बुलाना के पदों
सहेब मनमोह को पोथु महाय।

लिखने का करण यह है कि मैं आपने को
जनाता हूँ कि मैं आपने परिवार साथ आज
आज के तारीख १६-२-२५ में आपने पुरानी
लुथेवन मराठली से अलग हो कर आंग्रेजी
मराठली में मिले जाता हूँ।

प्रेमचन्द रक्का टिपकापानी

मोहन लकड़ा टिपकापानी

जोहन रोप्यो केअन्दउर

नरलो या २-६-२८

मन्त्राचार महासय इलाका के पदों से है व
मनमसोह को यो शु सहाय लिखने का करण यह है
कि मैं आपने को जानता हूँ कि मैं अपने परिवार साथ
आज के तारिख १९ = ६ = २८ से अपने पुराने लुथे रन
मराठली से अलग होकर अग्रेजी मरु हो मेमिन
जाना हूँ = जु एल नि रकी तरलो य
साफाने वल - कुजू

मगलदास विस

सा. पापकम तनिरकी

सा. रे जुल कुजू

लि. खित जु एल नि रकी

तरलो य

जुलुमस दिकर

लिखित

24-8-28.

मन्थर जो मनमोह का यागुसहाय.

लिखित का चक्रात ऐसी है कि आप के इलाका कोन्डा के टिपकापीना
जो कोन्डा के कितने भी ग्रंथों में ग्रहा किंये जाने का ग्रंथ मे
प्रसू भजे है, सो आप का जनाता है कि ^{मिस्त्रों के} समझिये जो बुझिये जावे, कि वे अपना
पुनर् मंडली में रहे।

आप के सहकर्मि

मेवला.

Pathras Lakra

मान्यवर, पंडा, मनमोह देवो को योशुसहाय।

आपको जितने अंगुलि में एक किताब चिट्ठी दिखी थी, लेकिन अब लो कोई जबाब मैं न पाया है।
सो मैं अभी दूसरी किताब उसी बात के बारे आप को अगले साप्ताहिक लिखता हूँ कि आप को मेरी खाना से इस अंगुलि
खाने वाले नोबेल महीना के शुरू या 14 ता: तक मुझे कोई जबाब आप से मिले, जिसके आशय में मैं रहूँगा।

आपको जनाया कि आप को कोन्डा दिखाने के तीन कशह के लुधियान भाई अंगुलि मंडली
में मिलने को दाखस्त दिखे हैं, जिस पर मैं एक उनसे पूछ पाऊँ कि क्या एक अंगुलि अंगुलि
है, जो 2 कशहों मुझसे कहा गया, सो मैं आप को जनाता हूँ कि आप उनसे बातचीत कर उनको
आप-आप-अपने मंडली में समेट लेवें।

- एक फोटो में — 1. हम लोगों के लिये माधुरा और प्रचारक के कोई स्थिति प्रबन्ध नहीं।
2. मंडली के सलतन्ती करते उचित चिन्ता नहीं।
3. लड़के लड़कियों के शिक्षा करते कोई प्रबन्ध नहीं।

उमचन्द प्रचारक — इसके बारे में कैसी बात है? इसको जनाकर प्रवश्यक ज्ञान पड़ता है, इसलिये

जो 2 बातें मुना, सो बातें आप को जनाता हूँ कि हमें को मालूम होवे —

उमचन्द का वधान है मैं गुनहगार नहीं हूँ। केवल माधुरा हमारे को लुट लेने को

इच्छा से ऐसी बातें निकाल स्थितियों और भाइयों को उभाड़ और पंचवैठ करवाये से जुलाना कि मेरे लिये

मुख्य जन निम्न रखे हैं, मैं लच्छा हो चुप रहा और जुलाना दिया। बाक पांडो मुन, अंगुलि और आप

जो न कर वाले, कि तुम्हारी बात माफ है सो क्या राबला अंगुलि? पांडो के कहने से मैं रखी नाट रिलवाया

इसके बाद मुझे खेती लिये काम चलाने न लगा, और इस पर भी पांडो मेरे नौकरी पर खुशदान न

दने लगे, ये सब बातें बातें मई और जून में हुई। ऐसी दुर्दशा देख मैं अपने पुराने मंडली को जो इच्छा थी

उमचन्द का वधान है मैं गुनहगार नहीं हूँ। केवल माधुरा हमारे को लुट लेने को

1957-1958-59

(175) *... (illegible) ...*

303-30

तरात्ताया - पन्नाचारा इलियस और तरात्ताया के भाइयों के बीच अनबनाव है।

१- इलियस पूर्वोक्त पंच गौरवाम सभा के राय से मंडली मध्य में राल गड, सो फिदा
 के से मंडली से सलाह न ले के नडा में उसको मंडली ग्रहाण लिमा-इसका ऊई भाती करारा हो ग।

२- इलियस के मंडली सभा पोक पूर्व डोई में गलत प्रपना देली में गिरा हर बनाया, वहां पाहुं जाके स्नान और प्रभु भोज करते रहता है।

३- प्रज्ञानवास के मुक्तदम में इत्ययम और आइज जलोहो हुय और ऐसे हालत में पदो उचित सलाह द्वारा भी उचित सहाय नहीं लियो ग्रहो तत्कारो समय इत्ययम मंडली गुहारा लियो ग्रयो ॥

प्रभु मे सहन मरी

Howon

Pathras Lakra

[Faint handwritten text at the bottom of the page]

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

सिद्धि सिद्धि सुख नमो भगवते वासुदेवाय । श्री गुरुभ्यो नमः ॥

Digitized by Google

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

[illegible]

मिशन में जाने को करना और १७-८-२८ को मैं एक चिट्ठी लिखी, चिट्ठी पाने पाछे मुझे समझने को आया, लेकिन मैं अस्वीकार किया, तब पाछे मुझसे बोले कि देखो कुंई डोर लठ में लगा हुआ है, जब इसी कट जो पेशा, तब कुंई कुंई में डोर पड़ेगा। मैं जवाब दिया जो होवे - बाद २६-८-२८ को पाछे माधुर को चिट्ठी देने मुझे संडेली सफा में राखी, मुझे बताया गया, कि तीन दोष लजाया गया नाटस में - १- वीं अज्ञान के बिकट, २- अविज्ञान (मिथ्या बिज्जल) में डारा, ३- वह कामेन हारा है। फिर मुझे संडेली सफा मिली और उन स्त्रियों को नहीं। -

प्रमचन्द के बारे इन बातों को सुन कितने भाइयों से मैं पूछा, कि इसको मानते हो? कितने उदात्त लिये नहीं, कितने बोले कि प्रिये, हमों के बिचार में भी पाछे इसको काम न किये, अगर सफा प्रिये देते तो बड़े समय देते प्रभा केवल उसका रास्ता बन्द करने के कास्ते दिया फिर स्त्रियों को नहीं ॥

जुलुआ डेला - पाछे ग्राहों को एक नगर से ग्राहों को दूसरे नगर से दावता है, भाइयों को यही कहती है। १- पूरा प्रसाद और फुल्ल के बीच जमान के बारे जो तकारर हुआ और अन-बनाव है सो पाछे और काम चारी सबके उसकोन और मदत से हुआ है।

२- जब जमान तरफ से पूरा प्रसाद को जमाने न सके तब दूसरा उपाय खोजने लगे, और इसकोने रंघ में पाछे माधुर अपकारो ओफिसर के बलु के अपने हता में रखे, और कश्पा स्टेट से दरुत्ताने कालों के जो हल्लारी में लग गये, जिसमें नैमन माधुर और फुल्ल भी साथ में थे। उनसे जब दरुत्ताने बोले आता था तब यह दोनो तिसाके पकड़वाये और हता हो में रात भर एक कोठरी में बन्द कर राखवाये, दूसरे दिन जब ओफिसर से बोड़ने का अपरिण पूरा प्रसाद करने लगा तो ओफिसर बोलने लगा कि देखो तुमही लोगो का पाछे मरुई है, बोलता है कि यदि ग्राह को देगे तो हम लोग अपरिण पर केस खड़े करेंगे - इस प्रकार मुकदमा चलवाने ३५ रु० जुर्माना दिया और मुन्ते है कि पाछे माधुर इनाम पाये है। सो पाछे के ऐसी २ बातें देखने से ऐसा मालूम होता है कि पाछे के सच में रहने से कोई रोज भी जोखिम में डालेगा सो अच्छा है कि उनको हाथ से निकल जाये ॥

No. 17

20 April

28 .

To, The Rev. Manmasin Toppo.

Chairman, Kondra Ilakam

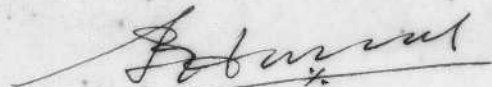
Kondra-P.O. Raidih.

Manyawar Padri,

Ap ko mera aur Council ka Yishusahay ! Ap ko malum howe ki Kondra Jashpurwalon ki asantushta ke darkhast par Council ne bichar kiya aur ek Commission wahan jane ko thaharaya hai. So us Commission ke 3 ang aur phir Manyawar Padri M.Prehn sahib bhi 3 tarikh ko Ranchi se Gumla aur 4 tarikh ko Gumla se Kondra pahunchke usi din Kondra men bhaiyon se panchait karenge. So ap sabhon ko jo ilake ke bnitar hain aur jinhon ne darkhast diya hai unko hai dijiye ki we 3 tarikh ni ko Kodra hazir howen. Ham log 4 tarikh wahan panchait jarur karenge.

May ki 5 win tarikh ko sanjh tak ham log Jashpur pahunch jana chahate hain jisten 6 tarikh Itwar ko wahan girja karen ayr 7 tarikh men Rajasahib ke gaddinashin hone ke shubh kam men Council ke pratinidhi hokar hazir ho saken. Joh sahib ko Jashpur ke is Utsaw me liye kuchh bandobast karne ko main ne aj likha hai. Ap log sab ko! unko uchit madad dijiyega.

Age shubh,



SECRETARY. C.C.

12/6/28

मिनकोल ७. द. २८२०

श्रीयुक्त मानव चर्च कोन्सील को

मुक्त मनमसीह टोप्यो सा० कोन्सील

का बहुत २ प्रेमसहाय !

आगे आप लोगो के निकट पेश करने को अनुग्रह पाने का अभी लक्ष्य
हो आपका निवेदन पत्र हिस्सा सहित आप लोगो के ध्यान में विचार के
लिखे रखता हूँ ।

क्योंकि जबसे इलाका ग्रेन्ट बन्द हो गई है मैं बड़े तबलीप से आपका जीवन
निर्वाह कर रहा हूँ, यहां की मंडली आपकी हर प्रचारक पत्र को उन्हीं के लिखे
काफी नहीं है केवल मेरे तलब और मंडली सम्बन्धी काम चलाने के लिखे
वेही आपकी अभी है जिनका हिस्सा मैं पेश करता हूँ । मैं लोचन बड़ा हूँ केवल
आपका तलब फार्मारी मलिका के लिखे १० रुपये लिया हूँ, आगे अगर आप लोगो
को कोरसे दया दृष्टि न हो तो मैं और अधिक तबलीप में पड़ जाऊंगा । इस वास्ते
मेरी दोन्ता पूर्विकं ऊर्जा आप लोगो में यह है कि अगर आप लोगो की इच्छा हो
खुसी हो तो कृपा करके मेरे लिखे को विशेष सहायता मिलाने का उपाय को लिखे
के मुक्त बेचारे का उपकार हो गला हूँ निमित्त; इस दया को प्रेममय काम
को लिखे मैं ताजीन्दगी धन्यवादी बना रहूंगा ।

Church Council

Received 12.6.28

Register No. 7.8...

Date 7.6.28

File 5

Reply No.

Date

आप लोगो का आशीर्वादी दास

मनमसीह टोप्यो

कोन्सील

और रक्च

१८२८ को ममदनी जो मुर हाथ में लाइ उसका खुलासा हिसाब
जो वही में दर्ज है । जनवरी - जून १८२८

ममदनी	रक्च
१८२७ का बाका रु० २-१० -	तलब म० टोप्यो दिसम्बर रु० २० - -
१४ सादी --- रु० ५२ - ८	डैरी --- - - - - ८ -
१६ सादी --- रु० ६० - -	तलब चौकीदार रु० १० - -
स्नानदान - रु० १-१२-८	दारवरस - - - - - रु० २० - -
प्रभु भोजदान रु० २-३ -	टिक्कट कागज - - - - रु० १ - -
टिक्करादान - १२-८	कामपत्र सन्निवही - - - रु० ३ - -
प्रभु भोजदान रु० २-१४-८	वार्षिक पंचैतमे - - - - रु० १७. ३ -
स्नानदान - रु० ३-८ -	प्राचीन रु० ७. ८ -
मं० ग्रहरी - रु० ३-० -	तलब म० टोप्यो जनवरी रु० ४० - -
	तलब म० टोप्यो फरवरी रु० १० - -
रु० १२४. ५. ३	रु० १२४. ३ -

M. Toppo
7.6.28.

forwarded to
Church department
M. P. P. P.
20.7.28

Church Council

Received 21.7.28

Register No. 154

Date: 12.7.28

File

Reply No.

Date

Kandree 12.7.28

Shriyukt-Mandli Purahit !

Main apko kandree.

Ilaka ka hisab Jan-june ka
blej deta hun kripakaragar
koi blul ho to maph karag.

2. Church Council mein
1. Darghat blejta hun kripakar
Secretary ko dedijiye tikat
na hon ke karon hisab drigi
ek saath blej dia hun.

3. Mandli mein aj kal
Bhai + bacchi Prayal achhe
hain, Gyrja, Sunday school
Prastina sanaj chatta hai par
kitne jagah mein kam jori hai

4. Koramchariyaen kei
kam jaisa chaliye nalin
hai Kyunki apne jiw kei ke
liye bhikam karna partu hai

5. Mandli ki den Koshish
karne par bhi aisa hi hai
jaisa chatte aya, Barhne ka
umed nalin dista hai aj
kal to prayal bahut ghar

Sham leina val jati hai isse
Gauri Kartinaai parti hai ki
sainjha me. Hise se ap dekh
sakege ki ilaki me dandani
bahut kam hai.

6. Swapalan chanda kai
ki list aj tak nahi hui
hai, Kendal aramb hui
hai.

7. Bile ka dandane ko
pura talishil aj tak nahi
hui hai is waqt bhejne
me deri hai kripanaph
Rijisega.

Ant me yis sab,

Afkei das

Mannasik Toppo

Kendra

श्रीगुरु मान्यवर चर्य कौन्सील को मुझ मनमसीह
टोप्यो का पीयूषदण्ड !

आश्विन खबर है कि कोन्सिल का स्कूल घर बहुत-
मैला है पोचोरा नहीं हुआ है - यह रिमार्क डिप्टी इन्स-
पेक्टर-से हुआ है -

इस बाबले मैं आप लोगों को बिली
कराता हूं - कि अगर आप लोगों की इच्छा है कि वह घर
मरामत किया जावे तो कृपा का धर फेराइ और पोचोरा
के लिफ्ट मो० २०) उपेक्षा मंजूर कर भेजने को कृपा
कोजिये - इस दया के लिफ्ट मैं धन्यवादी होऊंगा -

आप लोगो का - दास -

मनमसीह टोप्यो

शा० कोन्सिल

५: १२ - ७-२८ ई० -

Church Council
 Received at 6.28
 Register No. 103
 Date 19.6.28
 File.....
 Reply No.....
 Date.....

Jaspur Nagar

19-6-28.

पिपे. माई-1. Hurad.

आम-ओ-मेरा-पुत्र-सहज-

आम-ओ-मालूम-होवे-मि-रुम-लोम-
 परिवार-साहिब-2 वी पुन-ओ-पशुपु-नगर-पहुंचे-हैं
 और-माया-पुत्री-हैं।

दिवान-साहिब-से-मई रोज-मुलाकात-हुई
 और-अहुते-बाग-चौक-हुई-आज-विहान-पिपे-मुलाकात
 हुई-और-मंडली-दिवान-बाग-चौक-हुई
 पशुपु-से-मे-पुत्र-के-आम-अरने-ओ-मजरी।

मई-पुत्री-ओ-आम-अरने-ओ-मजरी-हुई-हैं।-दिवान-
 साहिब-अरने-हैं-जब-अने-लोम-आम-अर-रहे-हैं-तो
 और-दिवान-मजरी-अरने-हैं।-मैं-ने-अर-मई-पुत्री-
 मा-पशुपु-मे-आम-अर-हो-दिवे-हैं-ओ-दिवे
 उन-ओ-आली-हो-गई-इसी-लिपे-दूखे-ओ-के
 लिपे-मजरी-लोम-अर-हैं।-साहिब-ने-अर
 मे-आम-रु-लोम-ओ-जानना-चाहिमे-और-ए-ए
 ओ-जानना-चाहिमे-पर-रु-नहीं-जानते-हैं
 वे-आम-रुम-2-लिखने-से-पुन-पशुपु-हो-जाना-
 पशुपु-से-मे-पुत्र-के-आम-रुना।

माया-ओ-पुत्री-पशुपु-से-मे-अर-हैं-हैं
 लिपे-ओ-से-के-मौर-रहने-आ-हुन-अर
 पिपे-हैं-इसी-लिपे-दिवान-साहिब-आ-अर-हैं
 मि-पुत्र-के-से-मौर-रहने-के-लिपे-इलहावा
 अर-आम-देना-होगा।

दिवान-साहिब-से-अर-अर-अर-दिवे-हैं।
 उन-आ-अर-हैं-दिवे-अर-होना-मि-ए-ए-म
 से-के-दिवे-अर-ओ-मौर-मंडली-दिवान
 आम-और-उन-ओ-पुत्री-के-लिपे-अर-आ-जाने
 और-इलहावा-चौक-मौर-पुन-से-आम-विचार
 अर-पुन-अर-लेते।-

मैं-विचार-मे-अर-अर-अर-अर-मौर-हैं
 से-अर-के-लिपे-दिवान-मौर-मौर-हैं-मि-
 अर-आम-अर-से-आम-पुन-आम-से-अर-अर

मी२-अङ्ग-उत्ति-इ-वन्ति-उत्ति-
 इति-उत्ति-उत्ति-इ-उत्ति-वन्ति-उत्ति-
 इति-इ-उत्ति-उत्ति-इ-उत्ति-उत्ति-उत्ति-
 इति-इ-उत्ति-उत्ति-इ-उत्ति-उत्ति-उत्ति-

[illegible][illegible]

रु-रा-नर-नी-॥

Handwritten signature

man on the

Rev. J. Kiger

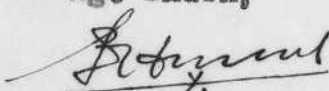
Manyawar Padri I. Kujur ko Yishusahay,

Ap ki 19-6-28 ki chitthi mili, main samajhta hun ki Manyawar Missionary John sahib ap ko Ilaka Men jane ke liye Travelling Expense bhej diye hain. Parantu ap Kinkel na jake Jashpurnagar chale gaye. Ap ko jab tak Sarhapani ki manjuri na ho tab tak khas Kinkel men rahna tha. Ap bina manjuri ke to Jashpurnagar men bhi nahin rah sakte hain. Phir ap janiye ki Jashpurnagar ap ke ilake ke bhitar nahin hai, ap ka Ilaka Jashpur-hethghat wa Kinkel Jashpur hai. Ap likhte hain ki main K John sahib ko likhuki ap ke talab Jashpurnagar bhej dewe. Parantu ap janiye ki ap ke talab ke liye K Kinkel Ilaka jawabdihi hai. John sahib janega ki ap ko Jashpurnagar men rahte bhi talab dene banega wa nahin. Ap apne Ilake se bahar rahenge aur taubhi ap ko talab diya jayega so to kuchh sandeh ki bat hai. So ap ka Ilaka Chairman aur ap iske bishay men janen.

2. Diwan sahib se ~~kax~~ kinko ^{license} milna chahiye iske bare main likh chuka hun. Ki logon ka sambandh Jashpur se hai aur kinka ab band ho gaya hai, so main Diwan ko likha hun, jiska jawab mujhe ab tak nahin mila hai. Magar ap yadi Jashpurnagar men jake Diwan se ap hi batchit karenge aur ho sakta hai ap ki baten mere lekh se na milen to is se garbari ho jayegi. So ap ko in baton ke bishay jinke bare main ~~kkkxpxx~~ likhaparhi karta hun Diwan se batchit ka karna uchit na tha.

3 Diwan Sahib jo ap ko kahte hain ki Jashpur ke bhitar rahne ke liye bishes & ilahida darkhast dene hoga to yadi we mujhe likhenge to waisa kiya jayega parantu ap is bishay par mat hi batchit kijiye. Kisi prakar ke hint unse pane se main likhunga.

Age Shubh,



Secretary to the Church.

होगे-
इसके-
स्वाभाव में ही रहे- हम स्वाभाव में चल रहे-
स्वाभाव के मंदिरों में ही- विवेक सारे के सम
कैसे- बल-आ-हमारे-आ-मंदिर
ए.ए. को ऐसे के जैसे संसार और विवेक सारे के सम
वैसा-ही-ही-ही-

— . — स्वाभाव उसे- विवेक करने-

- १, पूरा तलव मिले -
- २, कोई लोग अकेले तलव नहीं कर सकते-
- ३, तलव बल-आ-जैसे पूरा तलव और तलव देने-
- ४, आ-इसके मंदिरों के
- ५,

मनसिद्धि
किले-

ओरोनो-के अर्थ-
है ॥ ओरोनो-के अर्थ-
मैं ही दे रहा-ही-

Rev John A. -

१. मंदिरों का आकार हमने देखा- वात बहुत बड़ी गई-ही-
२. मंदिरों के अर्थ-
है ॥ ओरोनो-के अर्थ-
मैं ही दे रहा-ही-

ए.ए. का इनके स्वाभाव-आ-विशेष-
मैं ही लोग आ-जैसे-
कैसे-
है-
मैं ही लोग आ-जैसे-
है-
मैं ही लोग आ-जैसे-
है-

हम में पूछते हैं कि मंदिरों का आकार-
है-
है-
है-

आ-मैं ही लोग आ-जैसे-
है-
है-

मंदिरों को समझना मंदिरों का आकार-
है-

गवर्न -
वायोटोडा -

वर्ग - १६ प्रकाश है पाई ओ प्रचलन मूल मूल मूल
मूल मूल मूल - आते इन लोग नई देते - मूल मूल
मालगो लो पूरा - मालगो - किस के माल से पाते है
किस से नई पाते है -

मालगो -
उदाहरण -

कोरोनोम - इस - उरु रंग के का (रा - मंडल) जि (कु) जल -
आया -
१। वर्ग मालगो शिका पूरा रंग के नई है -
२। मालगो के स्वभाव नई मालगो है -

कोन -
माल -

Super Police के मालगो - इस - कि Autonomy के -
मूल जग प्रचलन मूल - मूल प्रचलन मूल उरु मूल -
मालगो के मालगो - इस - कि के मालगो - मालगो -
उरु मालगो - मालगो - मालगो प्रचलन लोग
देखने नई मालगो - मालगो मूल मूल मूल ओ
मालगो मूल -

मालगो
मालगो

इन लोगों का मालगो है कि मंडल मूल उरु मूल
मालगो - मालगो का मालगो है -
लोग मालगो का मालगो है -
इन लोगों का मालगो मालगो है -

मालगो प्रचलन - मालगो -
मालगो - मालगो - "

मालगो
मालगो

प्रचलन मालगो मालगो
मालगो

जब के कोरोनोम है तब तब मंडल मालगो - मालगो मूल
मालगो है -

मालगो मूल जब मालगो मालगो - तब मूल मालगो मालगो -
मालगो मालगो मालगो मालगो - मालगो मालगो
Tepkapan के लोग मालगो मालगो -

कोरोनोम उदाहरण जावे - मालगो मालगो के मालगो
मालगो मालगो है -

मालगो मालगो -
मालगो

मालगो मालगो मालगो के मालगो - मालगो मालगो
मालगो मालगो मालगो के मालगो - मालगो मालगो
मालगो मालगो मालगो के मालगो - मालगो मालगो
मालगो मालगो मालगो के मालगो - मालगो मालगो
मालगो मालगो मालगो के मालगो - मालगो मालगो

मालगो

ना: १०-५-२२ ।

१ जमीन के फल में—

21 ਮੀ: ਮਛੀ ਦਾੜ੍ਹਾ ਤੋੜ੍ਹ 31 ਮਛੀ ਦਾੜ੍ਹਾ ਤੋੜ੍ਹ।

आदिन लोग - जर्मन निराश्रितों के जाने से मंडला में बहुत लालच है -
 तो ~~जर्मन~~ निराश्रित लोग आते हैं - तो सब मान उन्हें को दिया जाये - उन्हें
 लोग - चलो = १, य-वालों को पूरा लालच ही मिलता है

3. ગાદિનાંડા નાં પાંચે ભાગે નાંડા યાત્રાનાં નાં નાંડા
લાઈ નાં યુદ્ધ-નાં નાંડા નાં

3. एनी जराक में 375 एम-कम एनी के पाइपों को जोड़ें।
कोई देखने रहे-मात्र है-
कोई पाइप जराक tourip रहे जरा-है-

8, हम लोगों को साहस देने वाले कार्य नहीं है प्रसिद्ध नहीं
नहीं है - आया है - किनेल वाले - या कोरु - से न
पुष्टि कह आते हैं - लोगों के पास जल्द बंद - रहे
आने से लोग निरुत्साह आते हैं ।

[illegible]

अभिनेताओं की मजदूरी के विषय में जो बातें सामने

अप्रतिष्ठित राजकोषी—१। इस लोको को १ माला मिले, यह राजकोषी—
 State को मिल जाये = १ माला को राजकोषी को
 भाग दे राजकोषी को १ माला देना व लोको को माला दे
 राजकोषी को १ माला दे।

हंसक-ने हल — जग से स्वाभाविक हुई है ऐसा प्रमाण
 देना है न'सक को हल है — देना है — यह भी
 प्रमाण यह जो कि जग से प्रमाण से प्रमाण है — जिससे
 न'सक प्रमाण, हल — है —

3 वाँ गुण सिंगेला — मग तो रा अ जिने प ही हुँ लो ॥ तो नि हुँ लो ॥ १११ —
सा हा पा नो दिने ए न न म न व ही म जे को —

लिमोशियन विरु
कोसिस के राजपुत्र
नेव धाला-

तिमोचिज्ज उवाच - एषा मेरी वही है - इसी
 में कुछ खयाल होता है - दो पहलवा के तालव रहे मिला-
 ले तो मेरे लुके जीयेगी - लकीयेगी । एषा । एक गाँव
 ले ५० पारा) खिलान है -

विशेष —

परिणत प्रवाण लोड व धु को दोला र जाते थे प (आख कोई
 नही जाते है) — यवान मूल की लोड धर्म नही जाते है —
 सरदापान — के पहिन पेंडी पाण — के १००० है — वही ^{कायवाड} — उल्लेख
 के समस्त भाग के साधुपाण — अथवा —
~~साधुपाण~~ — अथ वे रोग — दुःख — वे कोलते है कि

मनमसीह दोषो — अप्रचाल के लिये जवान —

हम शक्ति का नाम किया — इतने धर्म रोगों का
 नही है कि शक्ति नही के लिये है । उद्योग से बना —
 म इतने नही है — कि नही के लिये —
 कोई प्रवाण नही कोल लोड — हम नही — जमे
 को डूबा प्रवाण दिया जाये —
 अथ निसल पेंडी स्लैब के लिये अनुपम म
 पेंडी का है —
 पेंडी का डूबा — लव नही पूरा है — गोबेण
 के लव नही मान है —
 स्लैब का पेंडी — नही — माना है । पिता म
 है तो डूब डूब निसल — के — अथवा — अथ प्रवाण के
 मर लोड वे के नोड किया — प्रवाण महीगा —
 इसको र महीगा — दिया — लव वंद हुआ — विपदापान
 म देना — इला किया — वे डी. डी. डी. जमे — के —
 हम माल को प्रवाण जो Jackson के भाग —
 म माल अविना — लव के डी. डी. डी. डी. — अथवा
 डी. डी. डी. वगैरा — माल — माल का १० + ३
 पिता है तो विपदापान — के लोड म — अथ
 डी. डी. डी. जमे महीगा है
 अथ अथ के नही है —
 अथविना के ७ म (१४) गोबेण विपदा के
 लिये दिया — मही जवान + माल का १०० भाग —
 कोड — का लव देके —
 State Grant मथ Nov. के नही भाग है
 तो प्रवाण लोड — पेंडी नही — माना है — लव नही
 प्रवाण के नही मही मही है नही के लिये —
 डी. डी. का विपदा विपदा नही के लिये —
 तो निसल विश्व विपदा

Birker 18-3-28.

१. Timotheos Ekkā Tipkapani.
 २. M. Timo — Kandoa —

[illegible]

2121
 2121-2121
 M. T. M. 20

Birkerp 18-3-28.

श्रीपुरुष-मान्यवर-प्रेसीडेन्ट साहेब !

मोक्षसहाय !

आपसोश-मौ मै आप का पीठ कूट जानही-पत्थर-
इसनाफे उपपुत्र-समय पर रिपोर्ट आपके पास-
पहुंचनही सकी है तिसपर भी आपने जल्दी के लिपे-
छोड़ा लिखवाएं ।

१ - कोन्डा मंडली का हाल चाल - सर्वसधारण में बहुत-
आपसोसजनक है पुंके जौमा काम चलता है कुरंगो
लैभी सुलुष्टता नहीं है कर्मचारी सिरास्ता में है तलब
को धरी के कारण - जबसे ग्रेट बन्द हुआ है बहुत
लोग पुंचै भी नहीं आते हैं - हर एक-आपने पासको
आपकी आपने पास राव-देते हैं केवल हिस्से में
सेन्ट लाइज-हो रहा है । आधिकार कर्मचारी आपने
निज काम में लगे रहते हैं । तलब को धरी के कारण
हर एक मनुष्य का काम काते हैं । आगे मंडली वडे
डंबाडोल में है । पुंके एस्टेपी ० जी ० देन आधिकारी
पर प्रचार काते हैं कि हमारे तरफ देन नहीं है तुम लोगोको
सब कुछ देना होवा है सो हमारे तरफ आओ, तुम्हारे
स्कूल का विधान भी नहीं है आदि और आगे
विशेष ने ७ हाथ के लिपे एक पाद्री १ पुत्राक १ पुत्रा
दे रहा है - फुसलाकर लेजाने हारे को पाद्री बन रहा है
इससे भीतर २ में बुरों कामन इस इलाके से उधर जाये
का राय है पर आगे देख रहे हैं कि C.C. का काय रहे

२ — गिरजा कानो जानो कानो तक कूटछो है
पर केवल कटोरे भाइयादी मण्डा के बजह
कुछ रोना रोका है।

३ — प्रायः समाज + मंडलकुल कूटछो में है
और कटोरे बन्द है। मंडली सुनारी फार्म स
मालुम होगा —

४ — मिथ्या विश्वास कुछ चलता ही है

५ — सिनी लादियेन सन्तोषजनक नहीं है और बर्तन
का उभे नहीं; धरने ही का लक्ष्य किस्ती है

६ — कर्मचारी लाघा से वा कम पाते हैं। इससे
मंडली काम चलने का उभे नहीं गुमावा है
जहाँकि-महा कोइ बन्दोवस्त खर आदि नहीं है
जिसे कुछ मदद हो सके।

७ — मंडली जामन-सहेबों के कानों के कारण परी
देवरुहे है कि सब को रोने से दूर कर दिखाने
जाया है — और इसी उभे पर कानो खड़ी है।
कानो काटो गो में कूटछो सच है।

मा. प्रे. ग. न.

मा. प्रे. ग. न. - ५१५ -

M. V. Rao

Executive members.

Please see Rev. Mr. John's letters and Kinkel application.

(i) With regard to Jaspur I have written to him already on the 20th., also to meet the Kondra Commission on the 4th. at Kondra. As he is coming to Ichkela he will be nearer Kondra. So we agree as to place and date.

(ii) Help for outlying districts first. How to meet this?

(iii) What about our mission Fund? Has it exhausted, then how ~~to~~^{to} proceed?

(iv). Daud Soreng already ⁱⁿ transfer order list. I always wish that candidates should work in the congregations to qualify themselves for ordinations. Can we accept Mr. John's recommendation or selection?

As to other items I shall attend.

B. H. M. W.
SECRETARY.
25 / 4 / 28.

I think we better hold a meeting and discuss all these matters together. If possible try to arrange for it. J. Spons.

Please arrange a meeting to discuss matters.

M.P.

read this page coming.

Church Council

Received 25.4.28

Register No. 6.84.

Date 21.4.28

File.....

Reply No.....

Date.....

21
Tithel 21. 4. 28.

Dear Mr. Hurst,

Yesterday we got a very important letter from your honours. Our brethren there tell us, that the paper will be installed on the 7th May. He comes back from Calcutta on the 24th April. On that day there shall be already a grand reception. The Lutherans want to take part in it. But we are sorry we cannot help them at this occasion. It is too late to make any arrangement in 3 days. However, on the 7th May we shall be at Hongre. I shall be on the 5th at Tithela. On the 6th (Sunday) I shall take the service either at Tithela or at Hongre. We leave the decision about that to the brethren at Hongre.

Now we should be very glad if some of your people could come to Hongre for this occasion. The Romans are making great preparations, and we should not look too much behind them.

Please see that somebody of Romchi is there.

At that time we might also look into the matter of the letter you remember,

for which we have been appointed as a com-
mission. I am writing also to David Barber
at Sumner. Kindly let me know what you de-
cide.

Yours sincerely

A. J. M.

Rev. A. John,
P.O.Kinkel.

Kinkel 21-4-28.

Ilaka Matters

The Secretary to the Church Council
Ranchi.

1)

Sir,

Kindly forward the enclosed application of the Katechists of the Jaspur State to the C.C. for ~~kind~~ consideration, and let me say something about it. We know, of course, quite well that there is no money just now in the treasury, but we beg to consider that, as soon as money is available, whether the older Ilakas should not wait a bit longer for help, and the outlying districts be helped first. We do not ask special help for Biru, but only for Jaspur. There it is almost impossible for the poor Katechists to live without a Grant. Even the grant for Jaspur from the G.E.L. Mission Fund has not been sent since November last. So these karmcharis are in very strained circumstances.

2) The Ilakapanch of Kinkel decided yesterday to ask the C.C. for the service of a Candidate for one of the biggest congregations here, i.e. Kochedega, which is in a very deplorable state. We have heard that the Candidate Daud Sureng is without work. If the C.C. can send him to us, we shall accept him gladly, the more so, as he is a Kharia, and there are some 250 Kharias or more at Kochedega. But if the C.C. would let us have Candidate Johan Toppo of Sawai, now at Ranchi, he also should be welcome.

3) What about the Licenses for Jaspur marriages? Have they been applied for? Is there one for Padri Johan Kujur, and why is it not sent? There should be one for Padri Immanuel Kujur as soon as possible.

Yours sincerely

for Kinkel Ilaka panch

A. John.

Chairman.

रियासत जयपुर पुलिसिकल स्टेशन

तः १६ ४/२८

सिद्धि श्री दी श्री सबोधि महामन्थवर लैबरेन
इलाका पंच समुह महाशयों को हम जयपुरिया
प्राप के उपधीनस्थ कर्मचारियों के तब फल
बहुत चीज-साहाय।

प्राप प्राचीन बिबेक प्राप
के यहां पेच करने का सरम ऐसा है कि जूनी
प्राप्ता-लगभग कृ. महीने होते हैं हम लोगों
को तबल तबला कुछ नहीं मिला जिस से गुजारा
बिबेक जो साव साव घर का कर्तव्य प्रभावित
काम भी हम लोग नहीं कर सके प्राप करने का
भी किसी तरह का इंतजाम प्रबन्ध पुलिसिक-
जो बिबेकान भाई बाहिनो की न समझने के
तब से प्रत्यन्त कठिन जो सब तरह से - -
मुश्किलता देखा गया है। इसलिये सब तरह-
से ब्याप हो के सब बंका छोड़ के प्राप लोगों
से कुछ और प्राचीन है कि हम पुलिसिकल
वालों के प्रवस्था के लिये जबर ही कोई बिन्दु
बस्त कर दिया जाय कि हम सब लोग प्राप की
तरह प्राप के बने में काम करते रहें। हम लोग सब
तब से अपने को निहायत निःसहाय ब्याप देव
के प्राप लगा कर यह प्रती दाखिल करते हैं।
कि इस संकट में कोई उपाय से सहायता दी दिया
जाय बहुत उचित देवकर प्रती किया प्राप प्राप ही
समयान्तक है।

सुभा प्राप के शाखाधीन दास
जयपुर स्टेशन के कुल प्रचारक।

उक्त लक्ष्मीलिङ्ग प्रमाण मन्त्रादौ

उक्त ३३ क

सर्वज्ञि जगन्माहुरा जगन्निष्ठ किं उक्त इति
सर्वज्ञि जगन्माहुरा जगन्निष्ठ किं उक्त इति
सर्वज्ञि जगन्माहुरा जगन्निष्ठ किं उक्त इति

विपुला जगन्माहुरा जगन्निष्ठ किं उक्त इति

प्रेमचन्द तिकी प्रचारक सागी मवाना

प्रमुखपाल सध्या कोरोगी

विपुला जगन्माहुरा जगन्निष्ठ किं उक्त इति

मगलदास तिकी प्रचारक सागी मवाना

प्रेमचन्द तिकी प्रचारक सागी मवाना

Patras elter phargane

*Recd for J.L.
1/5/28*

POST

WRITING SPACE

INDIA



DEL
28 APR 28

11 - AM
CARD

ADDRESS ONLY



Church Council

Received 1.5.1928

Register No. 30

Date 25.4.28

Title

Reply No.

Date

*Rev. Jewel Loring
G. E. L. Church
H. E. Schools
Ranchi*

[illegible]

Handwritten text in a script, likely Georgian, covering the majority of the page. The text is written in dark ink and appears to be a formal document or letter. It is partially obscured by a stamp in the bottom left corner.

Church Council
Received 1.5.28
Register No 34
Date 30.4.28
File
Reply No
Date

A. 1.

POSTS

TELEGRAPHS

Class }
Prefix } Code

Inland Telegram

Space for Postage Stamps.

The Stamp must be affixed by the Sender and must be a Stamp for which there is not room here should be affixed at the back of this Form.

Stamps cut, torn or defaced are not accepted.

Notes for Inland Telegrams.

First twelve words.

Each additional word.

Ordinary 0 12 0
Express 1 8 0

Ra. A. P.
0 1 0
0 2 0

Office of Origin, Date and Service Instructions

Sent at

Charge.
Rs A

To

By

Nothing to be written by the Sender above this line

If this telegram is to be classed EXPRESS write the Class here.

If this telegram is on State business the word STATE should be written in this space.

When a reply is to be prepaid, write the words "Reply Paid" and the amount in the space below. These words are not charged for.

TO

Name

Address

Telegraph Office

Superintendent
Jashpur State
Jashpurnagar.

NOTICE.

PLEASE

GIVE A

FULL

ADDRESS

Received

wire

thanks.

Will

present

address

Arrange

Programme

Coming

4th

personally.

Harad

FROM

NOT TO BE
TELEGRAPHED.

Signature

and

Address of

P. Harad
Lutheran Compound, Ranchi.

POSTS & TELEGRAPHS
 ADDITIONAL SPACE FOR STAMP
 The accuracy of telegrams is not guaranteed; the sender must accept all risks of error or delay. Complaints regarding this telegram and applications for refund should be addressed to the Director-General of Posts and Telegraphs, Traffic Bureau, Ottawa, Canada. Applications for refund which do not contain complete information should be enclosed with the telegram. In addresses containing a name preceded by "Date of" or the symbol O/o should be inserted after the name of the person at the house of whom the telegram is to be delivered. A full and definite address is essential if a telegram not being delivered.

NOTICE
 PLEASE
 GIVE A
 FULL
 ADDRESS

TO
 Address
 Telegram Office

If this message is to be delivered by a messenger, please state the name of the messenger.

If this telegram is to be delivered by a messenger, please state the name of the messenger.

Each additional word...
 1st word 1.00
 2nd word 0.10
 3rd word 0.10
 4th word 0.10
 5th word 0.10
 6th word 0.10
 7th word 0.10
 8th word 0.10
 9th word 0.10
 10th word 0.10

FROM
 The ACCURACY of telegrams is not guaranteed; the sender must accept all risks of error or delay. Complaints regarding this telegram and applications for refund should be addressed to the Director-General of Posts and Telegraphs, Traffic Bureau, Ottawa, Canada. Applications for refund which do not contain complete information should be enclosed with the telegram. In addresses containing a name preceded by "Date of" or the symbol O/o should be inserted after the name of the person at the house of whom the telegram is to be delivered. A full and definite address is essential if a telegram not being delivered.

No. 16. / 28.

20th. April

28.

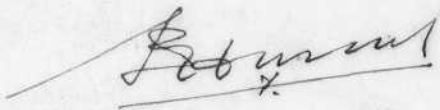
TO- Birad Minz,
Reader ,
Jashpurnagar. C.P.

Your note with enclosures addressed to Rev. M.Prehn.

The applicants may now be informed that a Commission is to visit Kondra on the 4th. of May next to hold an inquiry into the dissatisfactions of the Christians over there. A wide publicity should be given as to this news and all concerned asked to attend the meeting on the day appointed.

The pastor at Kondra is also being communicated and asked to make necessary arrangements for a successful gathering.

2. The Christians in Jashpur should be glad to know that the C.Council has asked its Office-bearers including the Rev. A. John of Kinkel to represent the Lutheran Church in the ceremonial functions at Jashpur during the installation of the Chief to the Gaddi.


SECRETARY.C.C.
Ranchi.

1.

30/4/28

POSTS

TELEGRAPHS.

No.

Class
Prefix }

Code

Inland Telegram

Space for Postage Stamps.

The Stamp must be affixed by the Sender and must not overlap. A Stamp for which there is not room here should be affixed at the back of this Form.

Stamps cut, torn or defaced are not accepted.

Rates for Inland Telegrams.

First twelve words.

Each additional word.

Rs. A. P.
Ordinary 0 12 0
Express 1 8 0

Rs. A. P.
0 1 0
0 2 0

Office of Origin, Date and Service Instructions

Words

Sent at

Charge.
Rs. A.

To

By

Nothing to be written by the Sender above this line.

If this telegram is to be classed EXPRESS write the Class here.

If this telegram is on State business the word STATE should be written in this space.

When a reply is to be prepaid, write the words "Reply Paid" and the amount in the space below. These words are not charged for.

TO

Name

Address

Telegraph Office

Rev: John

Kinkul

Simdega

NOTICE.

PLEASE

GIVE A

FULL

ADDRESS.

Arrange

Schkela

melting
Hurad4th

FROM

NOT TO BE

TELEGRAPHED.

Signature

and

Address of Sender

G. Hurad
G. E. L. Compound, Ranchi.

Kinkel 26.4.28.

Dear Mr. Hurad,

Just a few words regarding Kondra. I can be there on the date intimated by you, but how on earth can you come to Kondra? As far as I know, it will be quite impossible for the Motor, to come to that place. Is it not better for you to go to Nagar? Even if we choose Ichkela as our meeting place, you will have to walk from Nagar a few miles. Please let me know for certain, whether You expect me at Kondra on the 4th.

Yours sincerely

A. John.

POST

REPLY

ADDRESS ONLY

WRITING SPACE

Church Council

Received. 30.4.28

Register No. 25

Date. 26.4.28

File.....

Reply No.....

Date.....

Mr. P. Murad,
Secretary to the C.C.

Lutheran Compound,
Ranchi.



બોલે છે - વિત્તમંદાક ચુક
 દીવા રમાયું એને પાલે -
 મારૂં પાડિયું જે પાડ્યું
 વેળા નિરૂપિત છે તેના મોતી
 મરી ગયા છે વળાએ મેં પાછા મોકલ્યા

IN

POST



WRITING SPACE

सुभावे दीर्घा नव वलं तां भुं
 माय न रते दै वा लुख्य मे
 पाहा लिखिये नमो ~~सु~~ वा न
 सुभावे दे न्हन ये पाहा म.
 लिखुंग नमो कु छ रत्न सु
 पाहा नमो सुभावे हां गी रा -
 धी नमो यमा २ पाहा हां गी -
 मी सुभावे वल्लभ नमो सुभावे
 दे न्हन ये लिखिये नमो सुभावे



Mr. Peter Hurad.

Honka Siromtely

Panchi

g

Jashpur
16/4/28.

महामन्त्रवर महोदय इज्जत ग़सर सज़न
चार्ज कौंसिल सेक्रेटरी साहब

आप को हम जसपुर ख़ुशियाँ का योशुसहाय ।
प्राप्तना ऐसी है कि हमारे राजा का राज्यगद्दी होने वाला
है । वे २४वीं अप्रैल १९२८ ई० को कलकत्ते से यहां
आवेंगे और उसी दिन उत्साव के साथ यात्राप्रसंग (प्रोसेशन)
करके आपको जसपुर नगर में लाने की खैर है ।

रोमन कथोलिक सब इस दिन के लिये बहुत तैयारी
कर रहे हैं । हम आप के आधीनास्त लोग आ करेगी
नहीं जानते हैं, कहावत है "दर्प बिनु दरबार" सो
आप की फ़ौर से हम आश्रित कृपा चाहते हैं कि
कुछ करें ।

७वीं मई १९२८ ई० को राजा साहब राज्यगद्दी पर
विराजमान होंगे उसी दिन आपकी उपस्थिति की
निहायत जरूरी है और राजा की खुशी के लिये आप
की आगुवाई की वाट जोहते हैं ।

अपनी मसहली आ यथोचित भविष्यत अवस्था
को लक्ष्य बनाने के लिये यह एक शुभ अवसर है ।

N.B. रोमन लोग तो ३ मई को
अर्थात्- धोलेग से यहां नगर तक
गजावजा सहित और साँ ६३३ आप के आश्रित ।

में पुण्य से पुशोभित करना जसपुर के ख़ुशियाँ
चाहते हैं और Raja को well
decorated मोयोर पर धोलेग लूथरान मईयां ।
से यहां तक निज की गाड़ी से
बदलेवा कर लागे चाहते हैं

Jashpurnagar

Dated the 19th March, 1928.

Dear Sir,

The accompanying application of Lutheran Christians of Jashpur Upparghat is being sent to you for favour of putting it up before the Lutheran Mahasabha at Ranchi. The application is forwarded with the view to represent their opinion.

Yours Obediently

Birab Mung

Reader.
Jashpurnagar

To

Rev.M.Prehn

Lutheran Mission Compound

R a n c h i .

श्री श्री ६ श्री युक्त महा मान्यवर गो. ए. लु. महासभा को
हम जज्ञा पुर उपरधाट के गो. ए. लु. भाईयों को कर्म चारियों की
ओर से बहुत २ यो सुसहाय ।

भागे लिखना ऐसा है कि हम लोग इस स्वापालित मंडली
में अब कई बरस बिता चुके और हम लोगों को यह स्पष्ट मालूम हो
चुका कि जब से यह मंडली जर्मन मिश्रियों से अलग अलग हुई और
स्वापालित गृहस्थ किई, तभी से भाजलों वंस मंडली की आत्मिक
ओ लौकिक दसा दिनों दिन धटती ओ सोचनीय होती जा रही है,
क्योंकि इस स्वापालित मंडली को चलाने ओ संभालने के लिये
ना कोई अधिकारी ना मंडली को कोई विशेष भाईन है ।

अगर कोई अपने को अधिकारी भी दिखाया ओ दिखाता है तो
केवल मुंह की,

फिर कभी कोई मंडली भाईन भी जाये किया ओ करता है तो वह
भी स्वा-भाईन (मनमाने) की तरह भाजी ओ चलाई जसी गई ओ चलाई
जाती है, जिसे मंडली में दिनों दिन गड़बड़, बेचैनी, अपस्वार्ध ओ
अन्याय बढ़ती जा रही है, फिर ऐसी दसा में मंडली कितने समयों तक
रहेगी, ओ इससे मंडली को क्या लाभ ओ हानि पड़ेगी, इस का भी बेठकाना,

जब यह मंडली पहिले मंडली अधिकारियों के अधीन ओ मंडली
भाईन के अधीन रह कर आत्मिक ओ लौकिक बातों ओ कामों की बढ़ती
करती जाती थी, पर भाज यह भी नहीं कर सकती ओ करने नहीं चाहती है
पर बोलती है कि हाय मेरी दसा ।

इससे यह देख पड़ता है कि यह मंडली केवल अपने सकेतो ओ
उर्ध्व मंडलीयों की संगति (एकता) ओ कोई भरोसे पर ही स्वापालित गृहस्थ
किई पर खुद अपने योग्यता पर नहीं ।

इस लिये श्रीमान गो. ए. लु. महासभा के सामने इस मंडली की ये
बातें पेश कर स्वापालित मंडली से योंही अपने को अलग रखने की
अनती देती है, जिसे अपने को कोई अधिकारियों वा मिश्रियों के अधीन
रखें, जो इस दुर्बल मंडली को आत्मिक ओ लौकिक शिद्धि देकर,
खुष्टीये बिस्वास और जीवन की बढ़ती देकर, स्वापालित की योग्यता
पर पहुंचा देंगे ।

इस लिये हम सब कर्म चारी गया ओ भाई गया हजार
लोगों के सामने अपने इच्छा ओ खुसी से यह लेख पेश कर सही दे दिया

भाईने हजार मालिक हैं

सही भाज लोगों के दोन भाईन

सही बर्णावास प्रचारक बारो मारिया

सही कुंजल प्रचारक के तार चसपूर

१० बिलयाम प्रचारक के तार चसपूर

११ असाफ प्रचारक सिरोगा

१२ कोमल प्रचारक स्तेया

१३ प्रमुदास तोगा प्रचारक रनपुर

१४ शिमोन के तार पुनारल इरीकोना

१५ अवरियत कुजर भापूर इचकेला

१६ मालीन तोगा प्रचारक मिलमिलो

१७ जयपुर अवर धार के लुः मरि लोण्णे का सखे

१८ लोलस लकड़ा इचकेला

१९ प्रेमचन्द सिरोगा

२० विनयमान एका सिरोगा

२१ पुनारल देवा तस पोंगा

२२ प्रेमदास इरीकोना

२३ विनयमान अजला रेजाठ

२४ पुनारल कुजर गेलर

२५ मालीन तोगा प्रचारक

२६ सुलेमान स्तेया

२७ असा तोगा प्रचारक

२८ चमेल प्रचारक प्रचीन

२९ मरि लोण्णे का सखे

३० अवरियत कुजर भापूर इचकेला

३१ मालीन तोगा प्रचारक

३२ जयपुर अवर धार के लुः मरि लोण्णे का सखे

३३ लोलस लकड़ा इचकेला

३४ प्रेमचन्द सिरोगा

३५ विनयमान एका सिरोगा

३६ पुनारल देवा तस पोंगा

३७ प्रेमदास इरीकोना

३८ विनयमान अजला रेजाठ

बेर

दया धाम

हरि कौनो

जस पूरु कपरधार

कुल चन्द

स्ती फान

खि स्ती चित

नीरल

गौ दल

सिलास

सहाल

भैला महली

बर गाव

लोमु थोपुस

राई पाठ

पाकूठ

ખુનાથાન

રાદ્દવાર

ખસપૂર કપરદાર

માકડ મરડે

કુશાલમાય

"/

"/

કુશાલમાય

ખુનાથા

મકાલ

"/

ખુનાથા

નુવાસ

"/

"/

નુવાસ

કુસાળ

"/

"/

કુસાળ

કુલે માત

"/

"/

કુલે માત

સન્તોસ

"/

"/

સન્તોસ

ચિસ્તી પાલ

કરીલભા

"/

ચિસ્તી પાલ

ધીવર

"/

"/

ધીવર

"/

ધીવર

"/

"/

ધીવર

કુરિલ સિટોંગ જસપુર ઉપર ઘાટ

પાળુલ

”

”

”

મટોંગ

”

”

”

વિસ્વાસ

”

”

”

ચિસ્તોવાસ

”

”

”

મર્મદાસ

રતપુર

”

”

દાઉદ

”

”

”

પોદન

”

”

”

લુહ

”

”

”

પોલુસ

”

”

”

લુહ

દરાંગા

”

”

पल्लव देवगढ़ ११ ११ ११

मन्तराम रौप्य ११ ११

सिंहोन ११ ११ ११

बोवास वारोहरिप ११ ११

प्रेमप्रभात ११ ११ ११

पौलुस ११ ११ ११

बोवास विरोधाने ११ ११

पल्लव ११ ११ ११

सिंहोन ११ ११ ११

मंगलदास चिरवार ११ ११ प्रचिन

काननमहा ११ ११ ११

दाऊद ११ ११ ११

पर वस हाक केतार जहापूर ऊपरघाट

शुभास्त

दयाधाम

सन्तोस

फिलीप

प्रमुदयास्त

मोसिह देयलन

मुनीधान

खिस्तो बिह

ईमानुएल

निमोल

निरदीस

दयाधाम

निमोल

निमोल

याकुळ - सकरईगा जसपुर ऊपर घाट

आकुळ

प्रमुचरन

"

"

"

मल्ल पास

"

"

"

मुसा

"

"

"

ईश्वरदास

वरगांव

" ईश्वरदास

मैन मुख

"

"

खिल सहाय

नराइनपुर

"

श्रीमीन

"

"

याकुळ

"

"

संगलदास

दुहाकोना

"

खिलदास

"

"

सही !

हविल - कबो बांधा असपुर ऊपर घाट

गवरीशन

गवरीशन प्रचीन

सिन्हाण की उन्दपनी

सन्तोष

जुस्तान

जुस्तान

पुसहाय केतार

भारटोन

मेमान

युएल

रुप

तीगुस

हविल

मुसा

मैं भी इस राय में सम्मति हूँ H. Siga
 asst. master
 Jaspur Nagar School
 16/3/28

मैं भी इस राय में सम्मति हूँ Ashram Singh
 Jaspur Nagar
 16/3/28

Seen
 Ashram Singh
 16/3/28

मैं भी इस राय में सम्मति हूँ कि हम
 स्व पालित मराठों में नहीं पर जमिनी
 मित्ररियों के न्यायीन (मराठों) में रहेगा
 Martin Kuyar
 Drill Master Jaspur
 School
 16/3/28

दः आनन्द भलोह सिरकी मास्य जसपुर नगर

मैं भी इस राय में सम्मति हूँ
 Reinchand Singh

Accepted

M. K. Singh
 Time Keeper
 Jaspur Nagar A.P.

" G. K. Singh J.M. Jaspur State 16/3/28

M. K. Singh Jaspur Nagar
 16/3/28 State-Exp.